परिशिष्ट

प्रभात

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी का तिमाही मुख–पत्र
वर्ष–31 अंक–4 का परिशिष्ट अक्टूबर–दिसंबर 2018 सहयोग राशि–15 रुपए

दंडकारण्य कि मुक्ति के लिए अपनी जान की कुरबानी देने वाले साकलेर अमर वीर शहीदों को लाल–लाल सलाम

का. भीमा

का. राजे

का. सोमडी

का. गंगा

का. शांति

का. पोज्जा

का. हिडमे

26 नवंबर, 2018 को दक्षिण बस्तर डिविजन, साकलेर गांव में गुरिल्ला बल के ठहरने की पक्की सूचना पाकर साकलेर और उसके आस–पास के गांवों का लगभग 1200 बलों – जिनमें डीआरजी, एसटीएफ, सीआरपीएफ, कोब्रा के अलावा तेलंगाना के ग्रेहाउंड्स शामिल थे, द्वारा घेराव किया गया. बाद में पीएलजीए योद्धाओं के ऊपर बड़ा हमला किया गया, जिसका मुकाबला करते हुए 9 कामरेडों ने शहादत को पाया. इन वीर शहीदों में जोन इंस्ट्रक्टर टीम इंचार्ज कामरेड सूर्या–डीवीसीएम, दक्षिण बस्तर डिविजन के सीएनएम की अध्यक्षा पोडियम राजे–एसीएम, गार्ड जिम्मेदारी में कार्यरत माडवी सोमडी–पीएम, सीएनएम में कार्यरत मडकम सोमडी–पीएम, मडकम अर्जुन–पीएम, माडवी शांति–पीएम, मिलिशिया कामरेड्स मडकम पोज्जा (सल्लातोंग गांव), सोडी हिडमे (कन्नेमरका गांव), जन संगठन नेता मडकम जोगा (गुंड्राई गांव) शामिल थे. इन सभी कामरेडों को श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे. उनकी क्रांतिकारी जिंदगियों के कुछ खास पहलुओं पर नजर डालेंगे.

कामरेड ताती भीमा (सूर्या)

कामरेड ताती भीमा (सूर्या) ने दक्षिण बस्तर डिविजन, कोंटा एरिया, गगनपल्ली गांव के एक मध्यम वर्गीय दोरला आदिवासी समुदाय में 33 वर्ष पहले जन्म लिया था. कामरेड सूर्या अपने पीछे मां कन्नी और बाप ताति कन्नाल के अलावा तीन भाई और एक बहन को छोड़ गए. कामरेड सूर्या शादी–शुदा थे. उनकी जीवन संगिनी कामरेड क्रांति इसी वर्ष जनवरी में दुश्मन के हमले में शहीद हुई थीं.

कामरेड सूर्या के पिता ने खेती के साथ–साथ पोस्टमैन

की नौकरी करते हुए परिवार का पालन–पोषण किया. इस पृष्ठभूमि के चलते कामरेड सूर्या को पढ़ने का मौका जो आमतौर पर यहां के आदिवासी लोगों को नसीब नहीं होता है, मिला था. वे कोंटा शहर के मिशन आश्रम में रह कर 10वी कक्षा तक पढ़ाई की. पढ़ाई के साथ वह खेलकूद और जूडो और कराटे सीखने में प्रथम श्रेणी में रहते थे. डोल–तबला, हारमोनियम आदि सीखने में भी वे दिलचस्पी रखते थे.

एक क्रांतिकारी इलाके में पैदा होने की वजह से छोटी उम्र में से ही कामरेड सूर्या पर क्रांति का प्रभाव रहा. जब वह छुट्टियों पर गांव आते थे, गांव में जारी क्रांतिकारी गतिविधियों के बारे में सुन कर बेहद खुश होते थे. क्रांतिकारी पत्रिकाएं पढ़ते थे. 2001–02 के बीच में उन्होंने गुरिल्ला दस्ते के साथ अपना रिश्ता बना लिया. घर की आर्थिक स्थिति के बिगड़ने की वजह से 10वीं तक पढ़ने के बाद अपनी पढ़ाई छोड़ कर वे खेती काम में लग गए. 2004–05 में उन्होंने डीएकेएमएस और पंचायत की मिलिशिया में भर्ती होकर काम किया. गगनपल्ली पर कुछ हद तक सीपीआई, कांग्रेस व भाजपा पर्टियों का प्रभाव हुआ करता था. बुर्जुआ व संशोधनवादी पार्टियों के प्रभाव से जनता को दूर करके उन्हें क्रांतिकारी राजनीति से लैस करने में कामरेड सूर्या की भूमिका महत्वपूर्ण रही.

दिसंबर, 2005 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर कोंटा एलओएस में उनकी भर्ती हुई. छह महीने तक उन्होंने डिविजन कम्युनिकेशन टीम में काम किया. सितंबर, 2007 में उनका तबादला जोन इंस्ट्रक्टर (आई) टीम में हुआ था. क्रांतिकारी जरूरतों के अनुसार सौंपी गई हर किसी जिम्मेदारी को कामरेड सूर्या ने न सिर्फ तहेदिल से स्वीकार किया बल्कि उन्हें निभाने में तन–मन लगा कर काम किया.

2006 में कोंटा क्षेत्र में सलवाजुडुम का विस्तार हुआ. उस वक्त गांव–गांव में सलवा जुडुम के खिलाफ मजबूती से लड़ने के लिए जनता को शिक्षित करने में कामरेड सूर्या की भागीदारी थी. उस समय क्रांतिकारी आंदोलन में उनकी भर्ती ने उस एरिया में अच्छा प्रभाव डाला. उनके बाद बहुत से लोग भर्ती हुए. सलवा जुडुम के खिलाफ किए गए प्रतिरोध में कामरेड सूर्या की भागीदारी थी. पीएलजीए द्वारा एर्राबोर शिविर पर किए गए हमले में उन्होंने भाग लिया.

कामरेड सूर्या एक साहसिक योद्धा थे

सैनिक कार्रवाहियों में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया था. 2006 में – कोत्ताचेरू एंबुश, जिसमें पुलिस के दस जवानों को खतम किया गया, दरभागुडा एंबुश जिसमें सलवा जुडुम के दस गुंडों को मारा गया, मुरलीगूडा में मिजो बलों पर किए गए हमले के अलावा बासागुडा मिनी रेड, गोरगोंडा सैनिक कार्रवाई में उन्होंने हिम्मत के साथ भाग लिया. 2008 में जेलिटिन गाड़ी पर हमला करके 8 टन बारूद जब्त करने में भी उन्होंने अपनी भूमिका निभाई. हमलों व मुठभेड़ों में वे न सिर्फ हिम्मत व साहस के साथ लड़ते थे बल्कि साथी कामरेडों को हिम्मत से लड़ने व दुश्मन को धक्का देने का प्रोत्साहन देते थे. साकलेर में हुई अपनी आखिरी जंग में अदम्य साहस का परिचय देते हुए डीआरजी के दो गुंडों को मार गिरा कर और चार से अधिक जवानों को घायल कर उन्होंने अपने–आपको एक आदर्श गुरिल्ला साबित कर दिया.

वह एक कुशल सैन्य प्रशिक्षक थे

2007 से 2018 तक जोन इंस्ट्रक्टर टीम में सदस्य व इंचार्ज के रूप में उन्होंने अपना योगदान दिया. 2015 से उन्होंने उस टीम के इंचार्ज की जिम्मेदारी निभायी. एक इंस्ट्रक्टर के रूप में उन्होंने न सिर्फ दंडकारण्य बल्कि एमएमसी व एओबी जोनों में सैकड़ों गुरिल्ला सैनिकों को शिक्षण–प्रशिक्षण दिया. बेसिक मिलिटरी कोर्स के अलावा अनार्मुड कंबाट स्किल्स, सैनिक फार्मेशन्स, सेक्शन, पलटन और कंपनी ड्रिल्स सिखाए. मिलिशिया यूनिट्स को भी ट्रैप्स, बूबीट्रैप्स, एंबुशों के बारे में सिखाया.

कामरेड सूर्या सैनिक तकनीक को सीखने व अध्ययन

करके समझने में कुशाग्र बुद्धि के थे. कामरेडों को सिखाने व समझाने में उन्होंने निपुणता हासिल की. सैनिक कार्रवाइयों में शामिल होकर जिन अनुभवों को उन्होंने हासिल किया उन पर निर्भर होकर सैनिक ड्रिल्स को विकसित करने में उन्होंने अपना योगदान दिया. सैनिक अनुशासन का पालन करते हुए, विकसित होते हुए उन्होंने पार्टी व पीएलजीए का विश्वास जीता. उनके राजनीतिक, सैनिक व सैद्धांतिक विकास के मुताबिक उन्हें डीवीसी की हैसियत दी गई. सैनिक प्रशिक्षण के क्षेत्र में और भी विकसित होने की अपार संभावना व उस क्षेत्र को योगदान देने की काफी क्षमता रखने वाले कामरेड सूर्या को खोना उस क्षेत्र के लिए बड़ा ही नुकसान है.

आज जब क्रांतिकारी आंदोलन एक कठिन परिस्थिति से गुजर रहा है, कामरेड सूर्या मा–ले–मा सिद्धांत पर अटूट विश्वास के साथ आंदोलन में न सिर्फ आगे बढ़ रहे थे बल्कि साथी कामरेडों में क्रांति के प्रति विश्वास जगा कर उन्हें भी आगे बढ़ने का प्रोत्साहन दे रहे थे. निजी जिंदगी में भी कामरेड सूर्या ने कई कठिनाइयों का सामना किया. कामरेड सूर्या को आंदोलन से दूर करने के मकसद से सलवा जुडुम गुंडों ने उनके परिवार पर बेहद दबाव डाला. उनके पिता को जेल में डाल दिया गया. जुडुम के गुंडों ने सूर्या के छोटे भाई की हत्या की. पूरे परिवार को कोंटा सलवा जुडुम शिविर में पांच वर्ष तक बंधक बनाकर रखा गया था. तीन सौ घर वाले पूरे गांव को जुडुम गुंडों ने आग के हवाले कर दिया, जिसमें कामरेड सूर्या का घर भी जल गया था. जीवन साथी की मौत को भी उन्होंने झेला. इन सभी घटनाओं ने दुश्मन के प्रति उनकी नफरत को और बढ़ाया. इन दर्द भरी तकलीफों को राजनीतिक रूप से समझते हुए वे क्रांति के रास्ते में आगे बढ़ते रहे.

कामरेड सूर्या एक मेहनती व अनुशासित कामरेड थे. अपने विनम्र व स्नेहिल स्वभाव की वजह से कामरेड सूर्या ने सभी स्तरों के कामरेडों और क्रांतिकारी जनता के दिलों को जीता.

कामरेड सूर्या के अदम्य साहस, प्रतिबद्धता, अनुशासन, मेहनती स्वभाव, सैनिक तकनीक को सीखने व सिखाने के गुर, तकलीफों को दृढ़तापूर्वक सामना करने के अंदाज से सभी पीएलजीए योद्धाओं को सीखना चाहिए. उनके द्वारा अपनाए गए आदर्शों को और आगे बढ़ाना चाहिए.

कामरेड सूर्या अमर रहें!

अमर शहीदों के आदर्शों को अपनाएंगे!

कामरेड पोडियम राजे

दक्षिण बस्तर डिविजन, कोंटा एरिया, गोडेलगुडा गांव के एक मध्यम किसान परिवार में 29 वर्ष पहले कामरेड राजे का जन्म हुआ. उनकी मां जोगी है, जबकि कामरेड राजे के बचपन में ही पिता जोगाल का निधन किसी बीमारी के चलते हुआ था. कामरेड राजे के पांच भाई और एक छोटी बहन हैं. उनके पूर्वजों का गांव सुकमा के नजदीकी पद्दमगुडेम था. जमीन के अभाव की वजह से उनके परिवार गोडेलगुडा आ बसा था. बाल संगठन में काम करते हुए वह बड़ी हो गईं. बचपन से ही नाच–गानों के प्रति उनके शौक को देख कर 2003 में उनकी नियुक्ति पंचायत सीएनएम में की गई. कला प्रदर्शनों के जरिए जनता में राजनीतिक चेतना बढ़ाने की उन्होंने कोशिश की.

2006 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गईं. उसके बाद कोंटा एरिया के सीएनएम यूनिट में उन्होंने अपना योगदान दिया. पेशेवर क्रांतिकारी बनने के बाद ही उन्हें पढ़ाई–लिखाई नसीब हुई. पढ़ाई के साथ राजनीतिक व मिलिटरी विषयों को सीखते हुए वह विकसित हुईं. 2007 में कोंटा एरिया कमेटी की सदस्या बन कर 2010 तक उन्होंने सीएनएम अध्यक्षा का पदभार संभाला. 2010 में उनका तबादला डिविजन सीएनएम में हुआ था. 2010 में संपन्न सीएनएम की डिविजन महासभा में वह अध्यक्षा चुनी गई. शहादत तक उसी जिम्मेदारी को वह संभालती रहीं. डिविजन में मौजूद सीएनएम की पांच एरिया कमेटियों का वे मार्गदर्शन देती थीं. यूनिटों को मजबूत करने के लिए उनका निरंतर प्रयास चलता था. डिविजन की क्रांतिकारी जनताना सरकार में विद्या व संस्कृति शाखा की जिम्मेदारी निभाते हुए क्रांतिकारी जनताना सरकार की शालाओं व

आश्रमों के संचालन में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया. जोन स्तर की सीएनएम कमेटी में भी उन्होंने अपना योगदान दिया. जनता की कला व संस्कृति का अध्ययन करते हुए उनका विकास करने का प्रयास किया. दमन, विस्थापन इत्यादि कई समस्याओं पर गाना लिखने व नाटक बनाने की कोशिश किया करती थीं. पंचायत से लेकर जोन स्तर में संचालित सांस्कृतिक कार्यशालाओं में भाग लेकर उन्होंने न सिर्फ अपनी कला को विकसित किया बल्कि अन्य कलाकारों को प्रशिक्षण दिया. कई कार्यशालाओं के संचालन में भी उनकी भागीदारी थी. ऑडियो–वीडियो के रिकार्डिंग में उन्होंने भाग लिया.

इस तरह सांस्कृतिक क्षेत्र में कामरेड राजे ने अनमोल योगदान दिया. सामंती व साम्राज्यवादी संस्कृति को खतम करके नवजनवादी संस्कृति का निर्माण करने के लिए उन्होंने अपनी जिंदगी को समर्पित किया. उनकी शहादत से कला क्षेत्र को एक बड़ी क्षति पहुंची.

कई सैनिक कार्रवाइयों में भी कामरेड राजे ने भाग लिया. अपनी आखिरी जंग में भी दुश्मन के साथ आमने–सामने लड़ते हुए उन्होंने अपनी जान की कुरबानी दी.

कामरेड राजे अमर रहें!

कामरेड माडवी सोमडी

दक्षिण बस्तर डिविजन, किष्टारम एरिया, मेट्टागुडा गांव के एक मध्यम वर्गीय परिवार में 22 वर्ष पहले कामरेड सोमडी पैदा हुई थीं. वह मां – हिडमे और बाप – ऊराल की एकलौती महिला संतान थीं. कामरेड सोमडी ने बचपन में ही अपने पिता को खो दिया. सोमडी के तीन भाइयों में से एक भाई पेशेवर क्रांतिकारी हैं. अन्य दो भाई क्रांतिकारी जनताना सरकार व जन संगठन में कार्यरत हैं.

8 साल की उम्र में कामरेड सोमडी बाल संगठन में भर्ती हुईं. वहां काम करते हुए अपनी चेतना को विकसित करते हुए जुलाई, 2013 में 17 साल की उम्र में पेशेवर क्रांतिकारी बन गईं. जनवरी, 2014 में उनकी नियुक्ति किष्टारम एलजीएस में हुई. कामरेड सोमडी के कामकाज व विकास को देख कर जनवरी, 2015 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई. एलजीएस में उन्होंने डॉक्टर की जिम्मेदारी निभाई. सामूहिक कामों में वह बढ़–चढ़ कर भाग लेती थीं. कई सैनिक कार्रवाइयों में उन्होंने हिम्मत के साथ भाग लिया. किष्टारम एंबुश जिसमें माईन प्रूफ गाड़ी को विस्फोट से उड़ा दिया गया था, के अलावा पोटकपल्ली व भेज्जी आदि सैनिक कार्यवाहियों में उन्होंने भाग लिया.

कामरेड सोमडी के विकास व क्षमता को देख कर 2018 में उनकी नियुक्ति डिविजन कमेटी सदस्या की सुरक्षा गार्ड के रूप में की गई. वहां अपनी जिम्मेदारी निभाते वक्त ही उनकी शहादत हुई.

कामरेड सोमडी अमर रहें!

कामरेड मडकम सोमडी

कामरेड मडकम सोमडी दक्षिण बस्तर डिविजन, कोंटा क्षेत्र, ओंदेरपारा गांव के एक मध्यम वर्गीय परिवार में 18 वर्ष पहले पैदा हुई थीं. वह मां–जोगी व बाप–केशाल मडकम की दूसरी संतान थीं. उनकी दो बहनें व दो भाई हैं.

क्रांतिकारी इलाके में पलने–बढ़ने की वजह से बचपन में ही वह क्रांति के प्रति आकर्षित हुई. बाल संगठन में काम करते हुए क्रांतिकारी राजनीति व वर्ग संघर्ष को समझ लिया. चूंकि उनका गांव सड़क पर है इसलिए वह बचपन से पुलिस व सलवा जुडुम गुंडों के जुल्म व अत्याचारों को करीब से देखी. इससे वह लुटेरी सरकारों के स्वभाव को समझ कर उससे नफरत करते हुए क्रांति के प्रति आकर्षित हुईं. 2009 में उनकी नियुक्ति पंचायत सीएनएम में हुई थी. चार वर्ष वहां काम करने के बाद 2013 में वह पंचायत सीएनएम कमेटी में चुनी गई. क्रांतिकारी गीत–बातों के साथ जनता में क्रांतिकारी राजनीति का प्रसार–प्रचार किया.

दिसंबर, 2016 में वह पूर्णकालीन सदस्या बन गईं. उसके बाद सीएनएम टीम में उनकी नियुक्ति हुई. उसकी प्रतिबद्धता व चेतना को देख कर दिसंबर, 2017 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई. कुछ प्रतिरोध कार्रवाइयों में उन्होंने भाग लिया. जून, 2018 में एंडाम गांव के पास हुई मुठभेड़ में वह शामिल हुईं. उस घटना में शहीद हुई कामरेड की लाश को बाहर निकालने में उन्होंने अपनी जिम्मेदारी निभाई.

कामरेड सोमडी की शहादत की खबर सुनकर उनके परिजन और आस–पास के गांवों के लोग शोक में डूब गए. वे कोंटा और सुकमा में दो दिन पुलिस के साथ संघर्ष करके अपनी लाड़ली बेटी की लाश अपने गांव लाए. उन्होंने शहीदों के रास्ते में आगे बढ़ने की शपथ लेते हुए क्रांतिकारी रीति–रिवाजों के साथ कामरेड सोमडी का अंतिम संस्कार किया.

कामरेड सोमडी अमर रहें!

कामरेड मडकम गंगाल

दक्षिण बस्तर डिविजन, कोंटा एरिया, पोलमपल्ली एलओएस क्षेत्र, पालामडगू गांव के एक गरीब परिवार में देवे और देवाल दंपति की दूसरी संतान के रूप में कामरेड

गंगाल (17) पैदा हुए थे. जमीन की कमी के कारण उनके मां–बाप दुरोन गांव से पलायन करके उस गांव में आ बसे थे. यहां उनका परिवार लोहारी के साथ–साथ किसानी करते हुए गुजर–बसर करता है. क्रांतिकारी जनताना सरकार की पाठशाला में कामरेड गंगाल ने शिक्षा हासिल की. कामरेड गंगाल की क्रांतिकारी जिंदगी की शुरुआत दंडकारण्य में पैदा होने वाली इस पीढ़ी के ज्यादातर कामरेडों की तरह बाल संगठन से ही हुई थी. बचपन से ही उन्होंने पीएलजीए में भर्ती होने का सपना देखा था. उनके गांव के कई लोग पीएलजीए में कार्यरत हैं. वह भी उनके लिए एक बड़ा ही प्रेरणादायक विषय था.

दिसंबर, 2017 में पेशेवर क्रांतिकारी बन कर उन्होंने पीएलजीए में कदम रखा था. कोंटा एलजीएस के सदस्य के रूप में उन्होंने काम किया. रेक्की–स्काउट काम को वह बड़ा ही सूझ–बूझ व होशियारी के साथ किया करते थे. एरिया में संचालित कई छोटी सैनिक कार्रवाइयों में कामरेड अर्जुन की महत्वपूर्ण भूमिका रही. उनकी राजनीतिक चेतना व सैनिक क्षमता को देख कर जून, 2018 में उनकी नियुक्ति एक्शन टीम में हुई थी. उसके बाद ज्यादा वक्त नहीं बीता, इतने में ही कामरेड अर्जुन ने कुरबानी जोकि क्रांतिकारी जिंदगी की आखिरी मंजिल है, को पाकर क्रांतिकारी इतिहास में अपने–आपको अजर व अमर बना दिया.

कामरेड अर्जुन अमर रहें!

कामरेड माडवी शांति

कामरेड माडवी शांति पश्चिम बस्तर डिविजन, गंगालूर एरिया, गोरनाम गांव के एक गरीब परिवार में पैदा हुई थीं. पायकी–सुखराम माडवी दंपति की पांच संतानों में वह चौथी थीं. कामरेड शांति के तीन बड़े भाई और एक छोटी बहन हैं.

वह बाल संगठन में शामिल होकर साथी बच्चों के साथ मिल कर क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होती थीं. 2015 में उनकी भर्ती सीएनएम में हुई थी, जहां काम करते हुए उन्होंने जनता में क्रांतिकारी राजनीति फैलायी.

छोटी उम्र में ही दिसंबर, 2017 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन कर पीएलजीए में भर्ती हुई थीं. जनवरी, 2018 को मुदूम गांव के पास पुलिस द्वारा किए गए हमले में हिम्मत दिखाते हुए वह उस हमले से सुरक्षित निकली थी. मार्च 2018 में उनकी नियुक्ति जोन इंस्ट्रेक्टर टीम में हुई थी. वहां अपना योगदान देते हुए दुश्मन के हमले का सामना करते हुए कामरेड शांति ने अपनी जान की कुरबानी दी.

कामरेड शांति अमर रहें!

कामरेड मडकम पोज्जा

दक्षिण बस्तर डिविजन, किष्टारम एरिया, सल्लाम गांव के एक गरीब परिवार में कामरेड पोज्जा पैदा हुए थे. उनके पूर्वजों का गांव बंडेम था. वह मां–पोज्जे व बाप–देवाल के एकलौते बेटे थे. उनके बचपन में ही पिता का निधन हुआ था. कामरेड पोज्जा की

परवरिश की जिम्मेदारी को उनके चाचा ने संभाला. जवान होने के बाद कामरेड पोज्जा की शादी हो गई. बाद में उनके चाचा के निधन के चलते पूरे परिवार की जिम्मेदारी को कामरेड पोज्जा को ही उठाना पड़ा.

लेकिन परिवार की जिम्मेदारी तक सीमित न होकर उन्होंने सामाजिक जिम्मेदारी का भी बीडा उठाया. जीआरडी में शामिल होकर गांव की रक्षा में योगदान देने लगे थे. उनकी होशियारी व अनुशासन को देख कर 2014 में ग्राम पार्टी कमेटी ने उनकी नियुक्ति मिलिशिया पीएल में की थी, जहां सेक्शन कमांडर व पीएल के डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी उन्होंने निभाई. कई छोटी किस्म की सैनिक कार्रवाइयों में उन्होंने भाग लिया. पार्टी के आह्वानों व क्रांतिकारी दिवसों को सफल करके उस क्षेत्र में क्रांतिकारी राजनीति को फैलाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

पुलिस बलों के साथ लड़–भिड़ कर जनता ने कामरेड पोज्जा की लाश को लाकर उन्हें सम्मानपूर्वक अंतिम विदाई दी.

कामरेड मडकम पोज्जा अमर रहें!

कामरेड जोगाल

दक्षिण बस्तर डिविजन, गुंड्राई गांव वासी कामरेड मडकम जोगाल का पुराना गांव एलमागुंडा था. 32 वर्ष पहले उनकी पैदाइश हुई थी. उनकी मां का नाम दुर्गी और बाप का नाम मल्ला है. कामरेड जोगाल की दो बहनें और एक भाई हैं.

2010 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई. 2014 में पंचायत स्तर की जनताना सरकार की आर्थिक शाखा में सदस्य रह कर उन्होंने काम किया. 2018 में डीएकेएमएस कमेटी में रह कर अपना योगदान दिया. ग्राम कमेटी का हिस्सा बन कर जनता को एकजुट करके जन संघर्ष को आगे ले जाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

कामरेड जोगाल ने अपनी सुरक्षा हेतु जंगल में पनाह ली थी. जब पुलिस बलों को देख कर वे भाग रहे थे, तभी पुलिस बलों ने गेली मार कर उनकी निर्मम हत्या की.

कामरेड जोगाल अमर रहें!

कामरेड हिडमे

दक्षिण बस्तर डिविजन, किष्टारम एरिया, कन्नेमरका गांव के गरीब परिवार में 19 वर्ष पहले कामरेड सोडी हिडमे की पैदाइश हुई थी. पर्याप्त जमीन न होने के चलते उनका परिवार दरभा डिविजन के बुडूम गांव से इस गांव में आ बसा था. वह मां–पोज्जे–बाप देवाल की लाड़ली बेटी थीं. बाल संगठन का हिस्सा बन कर वह साथी बच्चों को एकजुट करके उन्हें नाच–गाना सिखाती थीं.

क्रांति के प्रति उनका लगाव देख कर ग्राम कमेटी ने उनकी भर्ती जीआरडी में की थी. उसमें कार्यरत होकर उन्होंने ग्राम पार्टी द्वारा सौंपी गई हर जिम्मेदारी को निभाने की कोशिश की थी. क्रांतिकारी दिवस, बंद–हड़ताल को सफल करने में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती थी. जनता के खेत जोताई व फसल कटाई, मींजाई व तेंदुपत्ता की तुड़ाई कामों के वक्त मिलिशिया में रहकर कामरेड हिडमे ने जनता की रक्षा की.

हालांकि साकलेर में हुए दुश्मन के हमले में कामरेड हिडमे का क्रांतिकारी सफर जल्द ही खतम हुआ हो लेकिन जिस रास्ते पर उनका सफर जारी रहा उस रास्ते को कामरेड हिडमे जैसे हजारों कामरेडों की कुरबानी से लगातार ताकत मिलती रहेगी. इस वजस से उस रास्ते पर जारी सामूहिक सफर क्रांति के सफल होने तक आगे बढ़ता ही रहेगा.

कामरेड हिडमे अमर रहें!

कामरेड रामसाय वडदा

गंभीर अस्वस्थता की वजह से 8 सितंबर, 2017 की आधी रात 12 बजे को युवा गुरिल्ला कामरेड रामसाय की दुखद मौत हुई. 9 तारीख को जनता एवं पीएलजीए कामरेडों ने क्रांतिकारी रीति–रिवाज के साथ उनका अंतिम संस्कार किया और उनके अधूरे सपने पूरे करने की शपथ ली.

कामरेड रामसाय वडदा ने माड डिविजन के कुतुल पंचायत के कोडेलेर गांव के एक मध्यम किसान परिवार में जन्म लिया था. बचपन से ही जनताना सरकार की शाला में उन्होंने पढ़ाई हासिल की. प्राथमिक पढ़ाई सीखते हुए वर्तमान समाज में जारी शोषण, जुल्म और अत्याचार के बारे में उन्होंने समझ लिया. क्रांतिकारी आंदोलन के नेतृत्व में गांव में जारी गतिविधियों में वह हंसी–खुशी से भाग लेते थे. समाज में जारी लूट को खतम करके एक सुंदर समाज

का निर्माण करने के मकसद के साथ 2014 में कामरेड रामसाय पेशेवर क्रांतिकारी के रूप में पीएलजीए में भर्ती हो गए. बाद में उनकी नियुक्ति उत्तर सब जोनल ब्यूरो की स्टाफ पलटन में हुई थी, जहां उन्हें सौंपे गए हर काम को सफल करने के लिए दिन–रात वह मेहनत करते थे.

पीएलजीए का अनुशासन सीखते हुए, क्रांतिकारी राजनीति और जनयुद्ध के बारे में अपनी समझदारी को बढ़ाते हुए निस्वार्थ भावना से सामूहिक काम को महत्व देते हुए जब वह आगे बढ़ रहे थे, जून, 2017 में उनके शरीर पर एक फोड़ा पैदा हुआ था. गुरिल्ला डॉक्टरों द्वारा किया गया इलाज बेनतीजा साबित हुआ, तो इलाज के लिए बाहर भेजने की कोशिश चल ही रही थी, इतने में ही उनकी दुखत मौत हुई.

कामरेड रामसाय अमर रहें!

(चूंकि कामरेड रामसाय की जीवनी पिछले वर्षों के अंकों में भूलवश छूट गई, इसलिए विलंब से छाप रहे हैं. इस त्रुटि के लिए क्षमा मांगते हैं.

–संपादक मंडल)

बालेवेडा अमर शहीदों को लाल सलाम!

माड डिविजन के कुतुल एरिया, परालकोट एलओएस क्षेत्र के बालेवेडा गांव के पास 4 जुलाई, 2018 की सुबह 6.20 बजे को पीएलजीए पर, घात लगा कर बैठे पुलिस बलों द्वारा किए गए हमले में पांचवी कंपनी में कार्यरत कामरेड किशोर और निब कंपनी में कार्यरत कामरेड अनिल की शहादत हुई.

कामरेड किशोर

कामरेड किशोर पश्चिम बस्तर डिविजन, भैरमगढ़ एरिया के मावेडा गांव के एक गरीब किसान परिवार में जन्मे थे. भैरमगढ़ जहां न सिर्फ तीखा वर्ग संघर्ष जारी है बल्कि सलवा जुडुम को पहला धक्का दिया गया, की लड़ाकू विरासत को आगे बढ़ाने के मकसद से जवानी में कदम रखते हुए ही कामरेड किशोर मिलिशिया में भर्ती हुए थे. उन्होंने जनता, जनताना सरकार व जन नेताओं की रक्षा करने दिन–रात मेहनत की. वह अपनी वर्ग चेतना को और बढ़ाते हुए 2009 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गए. 2010–11 में स्थानीय दस्ते में उन्होंने काम किया. उत्तर सब जोन में जब बटालियन–2 का निर्माण हुआ, कामरेड किशोर को उसमें स्थानांतरित किया गया. 2013 में एक विशेष काम के लिए जब कामरेड किशोर को भेजा गया तब वे बीमार थे. इसके बावजूद पार्टी द्वारा सौंपी गई जिम्मेदारी को उन्होंने पूरा किया. उस वक्त जब उन पर फायरिंग हुई, तो उन्होंने न सिर्फ हिम्मत के साथ उस परिस्थिति का सामना किया बल्कि साथी कामरेडों को हिम्मत दी.

2018 के टीसीओसी के दौरान उत्तर बस्तर डिविजन में किए गए मसपुर एंबुश में कामरेड किशोर असाल्ट ग्रुप में तैनात थे. दुश्मन को खतम करके हथियार जब्त करने में उनकी भागीदारी थी.

बटालियन के रद्द होने के बाद पांचवी कंपनी में कार्यरत होकर कमांडर के हर आदेश का पालन करते हुए, प्राथमिक पढ़ाई और राजनीतिक–सैद्धांतिक विषय सीखते हुए विकास होने के क्रम में कामरेड किशोर की शहादत हुई. शोषणविहीन समाज के लिए उन्होंने अपनी जान को न्योछावर किया.

कामरेड किशोर अमर रहें!

कामरेड उइके शंबु (अनिल)

कामरेड अनिल का जन्म दक्षिण बस्तर डिविजन, जगरगुंडा एरिया, मल्लेपाडु गांव के एक गरीब किसान परिवार में 20 वर्ष पहले हुआ था. बचपन में उन्होंने अपनी आंखों से सलवा जुडुम के भीषण हमलों को देखा था. सलवा जुडुम को हराने के मकसद से वह क्रांतिकारी बन गए. डीएकेएमएस और मिलिशिया में उन्होंने अपना योगदान दिया. बासागुडा से गश्त पर आए पुलिस बलों को धक्का पहुंचाने के लिए बूबीट्रैप्स लगाने और स्पाइक होल्स बनाने में उनकी भागीदारी थी.

जून, 2017 में पेशेवर बन कर वह पीएलजीए में भर्ती हुए थे. उसके तुरंत बाद उनका तबादला कंपनी–9 में हुआ था.

वह साथी कामरेडों के साथ घुल–मिल कर रहते थे. पीएलजीए के अनुशासन का सटीक पालन करते थे. समष्टि काम में हंसी–खुशी के साथ शामिल होते थे.

छोटी उम्र में ही महान मकसद के लिए उन्होंने अपनी जान को कुरबान किया.

कामरेड अनिल अमर रहें!

मिनपा अमर शहीदों को लाल सलाम!

10 जुलाई, 2018 को बटालियन–1 के सदस्य कामरेड माडाल को वह एक काम पर जाकर वापस अपने युनिट की तरफ आते समय पुलिस ने पकड़ा था. लगभग उसी समय मछली पकड़ने गए मिलिशिया के कमांडर कामरेड मुत्तन्ना को भी पकड़ा था. बुरी तरह यातनाएं देने के बाद मिनपा जंगल में दोनों की हत्या की. बाद में पुलिस ने हमेशा की तरह मुठभेड़ की झूठी कहानी गढ़ी.

कामरेड उयका माडाल

कामरेड उयका माडाल दक्षिण बस्तर डिविजन, जगरगुंडा एरिया, बट्टुम गांव वासी थे. जब वे घर में थे, बाल संगठन और मिलिशिया में उन्होंने काम किया. 2008 में पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. बटालियन में काम करते हुए

कई सैनिक कार्रवाइयों में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया. स्काउट व स्टाप पार्टी के सदस्य के रूप में कई कार्रवाइयों में उन्होंने भाग लिया. नेतृत्वकारी कामरेडों की सुरक्षा में उनकी भागीदारी थी. जन युद्ध की जरूरतों को पूरा करने के लिए 6 महीने तक विशेष काम के लिए जाकर विस्फोटक सामाग्री लाने में उनका योगदान रहा. दुश्मन द्वारा पकड़े जाने के दो दिन पहले भी एक विशेष काम पर जाकर सामान को सुरक्षित रखकर उन्होंने अपनी जिम्मेदारी पूरी की. जब वह दुश्मन के हाथ लग गए, पार्टी की गुप्तता को बचाते हुए उन्होंने अपनी जान की कुरबानी दी.

कामरेड उयका माडाल अमर रहें!

कामरेड नूपो मुत्तन्ना

कामरेड नूपो मुत्तन्ना दक्षिण बस्तर डिविजन, पामेड एरिया, मडपे दुलोड गांव के आदी एवं नूपो भीमाल दंपति के बड़े बेटे थे. 1999 में उन्होंने बाल संगठन में भर्ती होकर उसमें अपना योगदान दिया. 2002 में वे जीआरडी कमांडर बन गए. 2006 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई. उसी समय पंचायत कमांड इंचार्ज और मिलिशिया पीएल कमांडर की जिम्मेदारियां सौंपी गईं. शहादत के वक्त तक उन जिम्मेदारियों को निभाते हुए वहां के क्रांतिकारी आंदोलन व सैनिक प्रतिरोध में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया.

कामरेड मुत्तन्ना अमर रहें!

कामरेड हिडमे

11 जुलाई, 2018 को दक्षिण बस्तर डिविजन, किष्टारम एरिया, सोमलगुडा गांव में पुलिस गुंडों द्वारा कामरेड हिडमे पकड़ी गई. क्रूर पुलिस बलों ने बेरहमी से कामरेड हिडमे के साथ सामूहिक बलात्कार करके, बुरी तरह यातनाएं देकर उनकी निर्मम हत्या की.

कामरेड हिडमे सीनियर पार्टी सदस्या थीं. पेशेवर क्रांतिकारी के रूप में किष्टारम एरिया के केएएमएम में कार्यरत थीं.

कामरेड हिडमे का जन्म दक्षिण बस्तर डिविजन, किष्टारम एरिया, सिंगनमडुगु गांव के एक मध्यम वर्गीय परिवार में 26 वर्ष पहले हुआ था. मां–जोगी व बाप–हुंगाल की सात संतानों में वह सबसे बड़ी थीं. टीटो गांव से उनका परिवार पलायन करके सिंगनमडुगु गांव में आया हुआ था. उस परिवार ने पार्टी की मदद से यहां जमीन हासिल की. 16 वर्ष की उम्र में कामरेड हिडमे मिलिशिया में भर्ती हुई थीं. सलवा जुडुम के समय में गांव की रक्षा में उन्होंने अपना योगदान दिया. 2007 में उनकी नियुक्ति पंचायत केएएमएस में हुई. वहां एक साल काम करने के बाद उनकी नियुक्ति पंचायत सीएनएम में हुई थी. कला के माध्यम से जनता में क्रांति के संदेश ले जाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी. 2009 में पेशेवर क्रांतिकारी के तौर पर वह पीएलजीए में भर्ती हुई थी. पहले उन्होंने किष्टारम एलजीएस में काम किया. एरिया में संचालित छोटी व मध्यम किस्म की सैनिक कार्यवाहियों में उन्होंने भाग लिया. उनके कामकाज को देख कर 2010 में उन्हें नेतृत्वकारी कामरेड की गार्ड की जिम्मेदारी सौंपी गई.

दिसंबर, 2014 तक उन्होंने उस जिम्मेदारी को निभाया. उसके बाद उन्होंने एक साल तक सप्लाई टीम में काम किया. 2016 में किष्टारम एसी द्वारा कामरेड हिडमे को केएएमएस जिम्मेदारी दी गई. उसे निभाते हुए विभिन्न समस्यओं पर महिलाओं को एकजुट करने उन्होंने कड़ी मेहनत की. जुलाई, 2018 में उनका तबादला किष्टारम एरिया के गंगालेर पंचायत में हुआ था. उस एरिया में जाने के कुछ ही दिनों में उनकी शहादत हुई. जब वह उस पंचायत के गांवों में शहीद स्मृति सप्ताह के बारे में प्रचार कर रही थीं, वह पुलिस के हाथ लग गई थीं.

कामरेड हिडमे की शहादत की खबर सुन कर जनता पहले कोंटा उसके बाद सुकमा जाकर पुलिस के साथ संघर्ष करके उनकी लाश लायी. बाद में क्रांतिकारी रीति–रिवाजों के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया.

कामरेड हिडमे अमर रहें!

कामरेड सुंकरी राजकुमार

भद्राद्री कोत्तागुडेम जिला, चरला मंडल, कुरनापल्ली गांव के पास 24 जुलाई, 2018 को निहत्थे रहे चरला–शबरी एरिया कमेटी के सदस्य कामरेड अरुण को तेलंगाना पुलिस ने पकड़ लिया. बर्बर रूप से उन पर चाकुओं से वार कर उसके बाद गोलियां मार कर उनकी हत्या की गई. तेलंगाना में पैदा हुए कामरेड अरुण का योगदान दंडकारण्य में भी रहा.

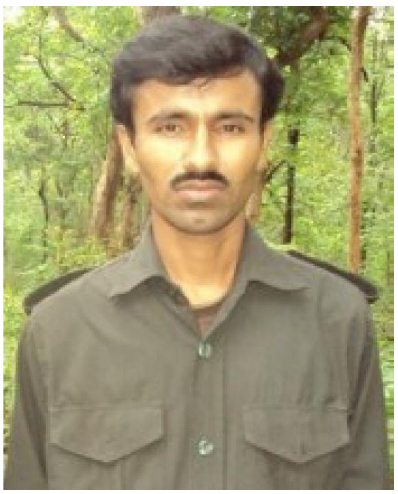

कामरेड सुंकरी राजकुमार (अरुण) 35 वर्ष पहले भूपालपल्ली जिला, दूदेकुलापल्ली गांव में पैदा हुए थे. रामक्का–सुंकरी सम्मय्या दंपति की छह संतानों में वह सबसे छोटे थे. कामरेड अरुण की तीन बहनें व दो भाई हैं.

कामरेड अरुण ने इंटरमीडियेट तक पढ़ाई की. बाद में गांव में विद्या वालंटियर के रूप में उन्होंने काम किया. शिक्षा के साथ–साथ उन्होंने जनता को चिकित्सा सेवाएं भी दी. दूदेकुलापल्ली एक मजबूत क्रांतिकारी गांव है. उन दिनों में वहां का हर घर क्रांति के साथ जुड़ गया था. उस माहौल ने छोटी उम्र में ही अरुण को क्रांतिकारी बना दिया. उन्होंने बाल संगठन में सक्रिय रूप से काम किया. 8वीं कक्षा में ही वह पार्टी का कोरियर बन गए. दिसंबर, 2002 में पेशेवर क्रांतिकारी बन कर गुरिल्ला जिंदगी में कदम रखा था.

2005 में जब वे कोरियरिंग काम पर बाहर गए थे, संयुक्त खम्मम जिले के पुलिस बलों ने उन्हें गिरफ्तार किया. पुलिस ने उन्हें बेरहमी से इतनी यातनाएं दी कि उनके दोनों कानों के सुनने की क्षमता हमेशा के लिए खो गई. उनका बाया हाथ टूट गया और वह कभी ठीक–ठाक नहीं हुआ. हालांकि पुलिस की यातनाओं ने कामरेड अरुण को स्थाई रूप से अपंग बना दिया था. लेकिन उनके क्रांतिकारी संकल्प को छोटी खरोंच तक नहीं आई. उन्होंने जेल जिंदगी का हिम्मत से सामना किया.

2006 में जमानत पर रिहा होकर उन्होंने फिर गुरिल्ला जिंदगी में कदम रखा था. तीव्र दमन में उन्होंने दृढ़तापूर्वक काम किया. जेल से रिहा होने के बाद कुछ वक्त उन्होंने महादेवपुर दस्ते में काम किया. 2007 में उन्होंने प्रोटेक्शन दस्ते में अपना योगदान दिया था. 2008 में उनका तबादला एटूरनागारम–महदेवपुर दस्ते में हुआ था. 2008 में उन्हें एरिया कमेटी में लिया गया. एक साल के बाद 2009 में उनका तबादला दंडकारण्य में हुआ था. दंडकारण्य के पश्चिम बस्तर डिविजन के मद्देड एरिया कमेटी का सदस्य बन कर 2010 से 2017 तक उन्होंने काम किया. वहां छात्र क्षेत्र में उन्होंने अपना योगदान दिया. मद्देड एरिया के तीव्र दमन में उन्होंने सक्रिय व सृजनात्मक रूप से काम किया.

2017 में कामरेड अरुण के इरादे के मुताबिक उन्हें तेलंगाना राज्य में स्थानांतरित किया गया. खम्मम जिले के चरला–शबरी एरिया कमेटी सदस्य की हैसियत से उन्होंने छात्रों को एकजुट करने में अपना योगदान दिया. कई जन संघर्षों का उन्होंने नेतृत्व किया. सांगठनिक काम के अलावा उन्होंने डॉक्टर व शिक्षक के रूप में भी जनता व पीएलजीए बलों को अनमोल सेवाएं दी.

2010 में कामरेड सृजना के साथ उनकी शादी हुई. 1 मार्च, 2016 को बोट्टेम गांव के पास पुलिस द्वारा किए गए हमले में कामरेड सृजना की शहादत हुई. उस दर्द को उन्होंने क्रांतिकारी चेतना के साथ सहन किया.

एक अनुशासित व प्रतिबद्ध कामरेड को क्रांतिकारी आंदोलन ने खोया.

कामरेड अरुण अमर रहें!

कामरेड रुकनी

16 अगस्त, 2018 भैरमगढ़ एरिया के कमलूर एलओएस दायरे के भांसी गांव के मासापारा में जब गुरिल्ला कामरेडों द्वारा आमसभा का आयोजन किया जा रहा था, अचानक पुलिस ने हमला किया. हालांकि इस हमले से जनता व पीएलजीए के अन्य कामरेड्स सुरक्षित रूप से निकल सके थे लेकिन एरिया कमेटी सदस्या, सीएनएम डिविजन कमेटी की सदस्या एवं सीएनएम की एरिया अध्यक्षा कामरेड कारम रुकनी पुलिस के हाथ लग गयी थीं. क्रूर पुलिस बलों ने कामरेड रुकनी के साथ बेरहमी से यौन अत्याचार करके उनकी हत्या की.

अपनी कला द्वारा गांव–गांव में क्रांतिकारी राजनीति का प्रचार–प्रसार करने वाली कामरेड रुकनी का जन्म पश्चिम बस्तर डिविजन, गंगालूर एरिया, एड्समेट्टा गांव के एक मध्यम वर्गीय किसान परिवार में 25 वर्ष पहले हुआ था. वह चिन्नी व कारम आयतू की लाड़ली संतान थी. उनकी एक बहन और एक भाई हैं. भाई क्रांतिकारी आंदोलन के एसी स्तर के कार्यकर्ता हैं. क्रांतिकारी माहौल में पलने–बढ़ने की वजह से छोटी उम्र में ही उन्होंने क्रांति में कदम रखा था. 2002 में वह बाल संगठन में भर्ती होकर पांच साल तक उसमें अपना योगदान दिया. 2007 में पंचायत सीएनएम की सदस्या बन कर जनता की राजनीतिक चेतना बढ़ाने के प्रयास में उन्होंने भाग लिया.

प्रतिक्रांतिकारी सलवाजुडुम के वक्त कामरेड रुकनी के गांव पर कई बार हमलें करके उत्पात मचाया गया. कामरेड रुकनी उस फासीवादी दमन को न सिर्फ अपनी आंखों से देखा बल्कि उसके खिलाफ प्रतिरोध किया. हमलों के बीच में ही वह जनता में क्रांति का संदेश ले जाने का जज्बा दिखाती थीं.

अपनी प्रतिबद्धता को और बढ़ाते हुए शोषित –उत्पीड़ित जनता एवं महिलाओं की मुक्ति के रास्ते में माओवाद का परचम उठाकर 2011 में वह आंदोलन में पूर्णकालीन सदस्या बनी थीं. कुछ दिन तक गंगालूर एरिया में काम करने के बाद डिविजन सीएनएम में उनका तबादला किया गया. जहां काम करते हुए वह अपनी कला व नाच–गानों द्वारा जनता में क्रांतिकारी संदेश ले जाती थीं. जनयुद्ध के प्रति जनता में चेतना जगाती थीं.

पूर्णकालीन सदस्य बनने के बाद ही उन्होंने पढ़ाई व लिखाई सीख ली. सीएनएम में वह डॉक्टर, संतरी आदि जिम्मेदारियां सहनशीलता के साथ निभाती थीं. वह अन्य कामरेड्स व जनता के साथ विनम्रता से पेश आती थीं. कामरेड रुकनी की राजनीतिक समझदारी को देखकर 2012 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई. पूरे डिविजन में घूम कर वह जनसभाओं, क्रांतिकारी दिवसों के मौकों पर सीएनएम के प्रदर्शन देती थीं. 2015 में उनका तबादला भैरमगढ़ एरिया में हुआ था. वहां उन्हें सीएनएम का दायित्व दिया गया. वह डिविजन सीएनएम में सदस्या के तौर पर बनी रहीं. फासीवादी दमन के बीच में एरिया के जनसंघर्षों को तेज करने में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई. वह शहीदों पर और जनता की अलग–अलग समस्याओं के बारे में कविता–गीत व लेख भी लिखती थीं. उनकी राजनीतिक समझदारी व विकास को देख कर 2016 में पार्टी ने उन्हें एरिया कमेटी सदस्या की पदोन्नति दी. एरिया में कामरेड रुकनी सीएनएम कामरेडों को नाच–गानों में प्रशिक्षण व मार्गदर्शन देती थीं. 2017 में हुई एरिया सीएनएम महासभा में वह एरिया कमेटी की अध्यक्षा चुनी गई थी. उसके बाद संपन्न डिविजन सीएनएम महासभा में वह डिविजन कमेटी में चुनी गईं. डिविजन कमेटी में रहते हुए डिविजन भर में सीएनएम का मार्गदर्शन देने में उन्होंने अच्छी भूमिका निभायी थीं.

उन्होंने कई सैनिक कार्रवाइयों में भी प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में भाग लिया था. तिम्मेनार मुठभेड़ में भी वह शामिल थी. उस समय दुश्मन के हमले से अपने आपको बचाने में वह कामयाब हुई थीं.

वह एक अनुशासित व सादा–सीधा कामरेड थीं. मित और मृदु भाषी थी. जनता के साथ घनिष्ठ संबंध रखती थीं. उन्होंने पश्चिम बस्तर डिविजन खासकर भैरमगढ़ की जनता पर अपनी अमिट छाप छोड़ी. क्रांतिकारी आंदोलन ने एक मूल्यवान महिला कलाकार को खोया.

कामरेड कारम रुकनी अमर रहें!

कामरेड सोमा गावडे

26 अगस्त, 2018 को पूर्व बस्तर डिविजन, वयानार क्षेत्र के कलेपाड गांव में जब कामरेड सोमा गावडे जनता की बैठक ले रहे थे, इसकी सूचना पाकर डीआरजी बलों

ने उन्हें पकड़ कर जनता की आंखों के सामने ही बुरी तरह यातनाएं देकर उनकी हत्या की.

लोकप्रिय जन नेता कामरेड सोमा गावड़े (नरसिंग) ने पूर्व बस्तर डिविजन, चिनारी ग्राम पंचायत के दोबिन पारा के एक गरीब किसान परिवार में 40 वर्ष के पहले जन्म लिया था. मां–बाप की नौ संतानों में वे दूसरे थे. जब क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार हुआ चिनारी गांव एक मजबूत क्रांतिकारी केंद्र बन गया. गांव के संघर्षरत माहौल के प्रभाव से 2003 में कामरेड सोमा डीएकेएमएस में शामिल हुए थे. 2005 में जब चिनारी में क्रांतिकारी जनताना सरकार का गठन हुआ कामरेड सोमा ने जन संपर्क शाखा की जिम्मेदारी संभाली. कई मुद्दों पर संचालित आंदोलनों, रैलियों व चक्काजामों में जनता को एकजुट करने में उनकी भागीदारी थी. आंदोलन में सक्रिय रूप से काम करते हुए उन्होंने 2006 में पार्टी सदस्यता हासिल की. उस पंचायत के जन विरोधी जमींदारों की जमीन गरीब लोगों के बीच बांटने में भी उनकी भागीदारी थी. 2006 में सलवा जुडुम का उस क्षेत्र में विस्तार करने की मुखियाओं ने कोशिश की. उस समय में जनता और पार्टी पर विश्वास रखते हुए आंदोलन में वे अडिग रहे थे. 2007 में चिनारी में हुई मुठभेड़ जिसमें चार लोगों की मौत हुई थी, से नाराज जनता और मिलिशिया को उन्होंने समझाया. 2008 में बेनूर एरिया के डीएकेएमएस कमेटी सदस्य बन कर तीन पंचायतों की जिम्मेदारी ली. 2011 से चिनारी गांव पर पुलिस के हमलें बढ़ गए. कामरेड सोमा को भी निशाना बना कर कई बार उनके घर पर हमलें किए गए. एक बार उनके ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी भी की गई. पुलिस बलों द्वारा उनके घर से सोना, चांदी और पैसे भी लूट लिए गए. उनके परिजनों के साथ मार–पीट की गई. एक तरफ पुलिस दमन, तो दूसरी तरफ गांव के मुखियाओं का दबाव, इस मुश्किल समय में उन्होंने अपने परिवार के लोगों की हिम्मत बढ़ाते हुए उन्हें क्रांति के पक्ष में खड़ा कर दिया.

जुलाई, 2017 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन कर बेनूर इलाके की जनता को एकजुट करने की जिम्मेदारी उन्होंने उठा ली. उसे निभाने के क्रम में डीआरजी गुंडों द्वारा उनकी हत्या की गई.

कामरेड सोमा गावडे अमर रहें!

गुमियावेडा शहीदों को लाल–लाल सलाम!

2 सितंबर, 2018 को नेलनार इलाके के गुमियावेडा के पास एसटीएफ और डीआरजी गुंडों द्वारा पीएलजीए के स्थानीय दस्ते को घेर कर की गयी अंधाधुंध गोलीबारी में माड धरती के प्यारे सपूत पीएलजीए के वीर योद्धा कामरेड रत्ती (नेलनार एसीएम), कामरेड समलू (पीएम), कामरेड सोनारी और मिलिशिया में कार्यरत 15 वर्षीय किशोर कामरेड बिजलु – मंगतु पारा गांव, शहीद हुए.

कामरेड रत्ती पोयाम

नारायणपुर जिला, ओरछा ब्लॉक, झारा एलओएस क्षेत्र के अकुड गांव में 27 वर्ष पहले कामरेड रत्ती पोयाम का जन्म हुआ. उनके तीन भाई और एक बहन हैं. जमीन के अभाव की वजह से उनके मां–बाप लोहंडीगुडा से पलायन करके अकुड गांव में आ बसे थे.

बचपन में ही कामरेड रत्ती ने क्रांतिकारी रास्ते में कदम रखा था. उन्होंने बाल संगठन में भर्ती होकर क्रांति में अपना पहला योगदान दिया. जवान होने के बाद मिलिशिया में भर्ती होकर गांव में जारी वर्ग संघर्ष में भाग लिया.

कामरेड रत्ती ने अपने गांव के नजदीकी गांव करमरी की प्राथमिक शाला में 5वीं कक्षा तक पढ़ाई हासिल की. उस समय उस शाला में आरंभ छात्र संगठन के सदस्य बन कर छात्रों में क्रांतिकारी राजनीति का प्रसार–प्रचार करने में उन्होंने अपना योगदान दिया.

दिसंबर, 2008 में कामरेड रत्ती गुरिल्ला दस्ते में भर्ती

हुए थे. 2008–2009 में बीनागुंडा क्षेत्र में जन मिलिशिया सदस्य के रूप में अपना योगदान दिया. उस समय जब उस दस्ते का कमांडर बीमार हो गए थे, नए होने के बावजूद कामरेड रत्ती ने पांच महीने तक उस दस्ते को संभाला. जन मिलिशिया के रद्द होने के बाद कामरेड रत्ती को नेलनार एरिया में भेजा गया, जहां उन्होंने राजनीतिक व सांगठनिक काम पर अपना ध्यान दिया. कामरेड रत्ती की राजनीतिक चेतना के मुताबिक 2009 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई. 2015 में उन्हें नेलनार एरिया कमेटी में शामिल करते हुए जन मिलिशिया कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई, जिसे सफलतापूर्वक निभाने के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की.

कामरेड रत्ती का अच्छा–खासा मिलिटरी अनुभव रहा. दुश्मन को धक्का देने के लिए वह हमेशा तत्पर रहते थे. न केवल एक सदस्य बल्कि टीम कमांडर के रूप में दर्जनों मिलिटरी घटनाओं में उनकी भागीदारी थी. 2010 में कोचवाही में एक्शन करके पुलिस के एक जवान को मार कर, उसका एसएलआर छीनने में कामरेड रत्ती बहादुरी के साथ शामिल हुए. 2011 में वेडमाकोट थानेदार के खात्मे की घटना में, डोंगर के नोक्को कोर्राम के खात्मे में, 2016 में कुकुडाझोर में पुलिस के दो जवानों को खतम करने की घटना में कामरेड रत्ती हिम्मत के साथ शामिल हुए. गुरिल्ला तकनीक का पालन करते हुए टेकानार रोड पर प्रेशर बम लगा कर आईटीबीपी के 3 जवानों को घायल करने वाली घटना में कामरेड रत्ती का विशेष योगदान रहा.

मिलिशिया एवं जनता को संगठित करके दुश्मन के खिलाफ प्रतिरोध करवाने पर वे ध्यान देते थे. दुश्मन की आत्मसमर्पण नीति का उन्होंने कड़ा विरोध किया. कामरेड रत्ती को कमजोर करने के लिए दुश्मन ने उनके परिजन पर दबाव डाला था. उनके एक भाई को जेल में डाल दिया गया. और एक भाई के साथ गांव के मुखियाओं ने मार–पीट की. दुश्मन की ये करतूतें कामरेड रत्ती की क्रांतिकारी दृढ़ता के सामने नाकाम साबित हुईं. अपने दायित्वों को निभाते और आगे बढ़ते हुए जन मिलिशिया कमांडर और एलओएस कमांडर की जिम्मेदारियां उठा कर जन संगठन और जनताना सरकार के कामकाज को उन्होंने संभाला.

दस वर्ष की अपनी क्रांतिकारी जिंदगी में कामरेड रत्ती ने अनमोल अनुभव हासिल करके माड डिविजन आंदोलन में अहम योगदान दिया.

कामरेड रत्ती अमर रहें!

कामरेड समलू पोयाम

कामरेड समलू माड डिविजन के झारा एरिया के कोडेली गांव में लगभग 21 वर्ष पहले पैदा हुए थे. बीमारी के चलते उनकी मां का निधन हुआ था. कामरेड समलू पिता, दो छोटी बहनों और एक छोटे भाई को अपने पीछे छोड़ गए. क्रांति के लिए उनका पहला योगदान बाल संगठन में हुआ था. बचपन में ही कामरेड समलू की उनके विचार के विपरीत शादी की गई. लेकिन क्रांतिकारी नाच–गाना व राजनीति को सीखते हुए पलने–बढ़ने की वजह से उन्होंने फैसला किया कि वे अपनी जिंदगी को क्रांति के लिए समर्पित करेंगे. इसलिए वह अपनी शादी को ठुकराते हुए गुरिल्ला दस्ते में शामिल हो गए. गुरिल्ला बनने के बाद ही उन्हें प्राथमिक पढ़ाई नसीब हुई. गुरिल्ला नियमों व अनुशासन को सीखते हुए, उन्होंने अपनी राजनीतिक समझदारी को बढ़ा लिया. उनकी राजनीतिक चेतना को देख कर 2015 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई.

पार्टी द्वारा सौंपे गए हर काम को सफल करने के लिए कामरेड समलू जी भर प्रयास किया करते थे. दुश्मन के मनोवैज्ञानिक युद्ध को हराते हुए वह आंदोलन में अडिग रहे.

कामरेड समलू अमर रहें!

कामरेड डुंगी (सोनारी)

नारायणपुर जिला, ओरछा ब्लॉक, नेलनार गांव में 28 वर्ष पहले कामरेड डुंगी पैदा हुई थीं. वह मां–बाप की प्रथम संतान थीं. उनकी तीन बहनें और एक भाई हैं. कामरेड डुंगी के बचपन में उनके परिवार ने गांव के मुखियाओं के दबाव का सामना किया. उनके जमीन पर अपना कब्जा जमाने के बुरे इरादे से गांव के मुखियाओं ने कामरेड डुंगी के मां–बाप को गांव से भगाने की कोशिशें की. हालांकि

क्रांतिकारी आंदोलन ने न सिर्फ उनके परिवार को बचाया बल्कि मुखियाओं को चेतावनी दी.

कामरेड सोनारी ने अपने बचपन में ही क्रांति का रास्ता पकड़ा था. बाल संगठन, मिलिशिया और केएएमएस में उन्होंने अपना योगदान दिया. केएएमएस के गांव स्तर की अध्यक्षा बन कर उन्होंने महिलाओं को एकजुट किया. करीबन एक दशक तक जन संगठन व क्रांतिकारी जनताना सरकार की कमेटी सदस्या के रूप में अपना योगदान देकर कामरेड सोनारी अपने गांव में एक जन नेत्री के तौर पर उभरी थीं. नेलनार एरिया का इंचार्ज भूतपूर्व डीवीसी सदस्य नवीन जब पार्टी से भाग कर गद्दार बन गया था और बाद में उसने एरिया के जन संगठनों, क्रांतिकारी जनताना सरकारों व मिलिशिया के ऊपर आत्मसमर्पण करने का दबाव डाला तब आकाबेडा में नये कैंप खोलने के बाद नेलनार सरकार कमेटी के कुछ लोग सरेंडर हो गए. उस गांव के कुछ लोग पुलिस में भर्ती हुए. इन सभी विपरीत परिस्थितियों में कामरेड सोनारी क्रांति के पक्ष में न सिर्फ चट्टान की तरह खड़ी हो गईं बल्कि उन्होंने जनता की एकजुटता को बनाए रखने का प्रयास किया. अपनी प्रतिबद्धता को और बढ़ाते हुए दिसंबर, 2017 में पेशेवर क्रांतिकारी के रूप में पीएलजीए में भर्ती हुईं.

प्राथमिक पढ़ाई और सैनिक नियमों को सीखते हुए वह आगे बढ़ी. जनता और साथी कामरेडों के साथ कामरेड सोनारी का स्नेहिल व्यवहार हुआ करता था. जनता के साथ वह सम्मानपूर्वक बात किया करती थीं. युवती–युवकों की बैठक करके क्रांतिकारी राजनीति से उन्हें लैस करने की कोशिश करती थीं. जल, जंगल, जमीन को बचाने के मकसद से जनयुद्ध व जन संघर्ष में शामिल होने के लिए उन्हें प्रेरित करती थीं. इस तरह कामरेड सोनारी ने जनता व अपने साथी कामरेडों पर एक आदर्श छाप छोड़ी थी.

कामरेड सोनारी अमर रहें!

शहीदों के अधूरे सपनों को पूरा करेंगे!

कामरेड बिजलू पोडियाम

गुमियावेडा में हुए पुलिस हमले में पेशेवर क्रांतिकारियों के साथ मिलिशिया के सदस्य कामरेड बिजलू भी शहीद हुए थे.

कामरेड बिजलू नेलनार गांव के मंगतू पारा के एक गरीब आदिवासी परिवार में 15 वर्ष पहले पैदा हुए थे. जमीन के अभाव के चलते उनका परिवार जगदलपुर से पलायन करके इस गांव में आया हुआ था. बीमारी के चलते कामरेड बिजलू के पिता की मौत हुई थी. कामरेड बिजलू अपने पीछे मां, चार भाइयों और एक बहन को छोड़ कर गए. वह बचपन से ही अन्य के घर में मजदूरी करते हुए बाल संगठन में भी काम किया करते थे. जवान होने के बाद उनकी भर्ती मिलिशिया में हुई थी. उसमें काम करते हुए जनताना सरकार को बचाने के लिए उन्होंने अपना योगदान दिया. कामरेड बिजलू की बड़ी बहन पेशेवर क्रांतिकारी के रूप में पीएलजीए में कार्यरत हैं. पार्टी में भर्ती होने के लिए जब उनकी बहन ने फैसला किया, तो कामरेड बिजलू ने न सिर्फ उस फैसले का स्वागत किया, बल्कि उन्होंने भी उसी रास्ते पर आगे बढ़ने का निर्णय लिया. पेशेवर बनने का उनका सपना पूरा होने के पहले ही उन्होंने शहादत को पाया.

कामरेड बिजलू अमर रहें!

ओरछामेट्टा शहीदों को लाल सलाम!

माड डिविजन, इंद्रावती एरिया के आदेर एलओएस क्षेत्र में गश्त अभियान कर रहे दुश्मन पर हमला करने गई पीएलजीए की एक छोटी टुकडी के ऊपर 12 सितंबर, 2018 को आदेर और ओरछामेट्टा गांवों के बीच में घात लगा कर बैठे पुलिस बलों द्वारा की गई अंधाधुंध गोलीबारी में पीएलजीए के मेन फोर्स के कामरेड सोडी भीमा और बेस फोर्स के दो सदस्य कामरेड बोडंगा और कामरेड संतु गोटा शहीद हुए.

कामरेड भीमा

कामरेड भीमा दक्षिण बस्तर डिविजन, कोंटा एरिया के कडियूम गांव के एक आदिवासी गरीब परिवार में 1996 में

पैदा हुए थे. कामरेड भीमा के मां–बाप जमीन की तलाश में दरभा डिविजन के कोर्रानार से कडियूम आ बसे थे. कामरेड भीमा मां–बाप, तीन बहनें और एक छोटे भाई को अपने पीछे छोड़ गए थे. संघर्षरत माहौल में पलने–बढ़ने की वजह से कामरेड भीमा ने बचपन में ही क्रांतिकारी बाल संगठन के जरिए क्रांति में कदम रखा था. कामरेड भीमा ने अपनी आंखों से सलवा जुडुम उत्पात को देखा था. उनके गांव के 50 से अधिक लोग उस समय सरेंडर होकर पुलिस में भर्ती हो गए. कुछ लोग जुडुम नेता भी बन गए. हालांकि कामरेड भीमा के परिवार ने जनता व क्रांति के पक्ष में खड़ा होकर हिम्मत के साथ जुडुम का मुकाबला किया. कामरेड भीमा ने सीएनएम (चेतना नाट्य मंच) में भर्ती होकर सांस्कृतिक योद्धा बन कर नाच–गाना, नाटक आदि कला रूपों को अपने हथियार बना कर जुडुम के खिलाफ जनता को जागृत किया. वह क्रांति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और बढ़ाते हुए 13 जुलाई, 2009 को पेशेवर क्रांतिकारी के तौर पर पीएलजीए में भर्ती हो गए. एक वर्ष तक कोंटा एरिया में ही काम करने के बाद 2010 में उन्हें 8वी पलटन में स्थानांतरित किया गया. कुछ वक्त वहां काम करने के बाद नए इलाके में यानी चौथी पलटन में उनका तबादला हुआ. वहां नेतृत्वकारी कामरेड की गार्ड जिम्मेदारी को उन्होंने निभाया. दुश्मन के हमले में अपनी पलटन के कमांडर की शहादत होने के बावजूद कामरेड भीमा हिम्मत के साथ आगे बढ़े. नए इलाके में कई तकलीफों का उन्होंने सामना किया. क्रांतिकारी जरूरतों के अनुसार ओडिशा राज्य से झारखंड राज्य तक सैकड़ों किलो मीटर पैदल चलते हुए जाकर वापस आए थे. 2015 में अपने परिवार को मिलने जाकर वह वहीं पर रुक गए. एक वर्ष तक वह घर में ही रह गए. 2016 में अपनी गलती मान कर फिर पेशेवर क्रांतिकारी बनने के अपने इरादे को उन्होंने पार्टी के सामने व्यक्त किया. उनकी ईमानदारीपूर्वक आत्मालोचना को नजर में रख कर पार्टी ने फिर उन्हें एक मौका दिया. 2016 में दोबारा उनकी नियुक्ति कोंटा दस्ते में हुई थी. इत्तागुप्पा, तेमेलवाया, गच्चनपल्ली, पुसुम, कोरापाड, राजगूडेम आदि कई छोटी, मध्यम व बड़ी किस्म की सैनिक कार्यवाहियों में उनकी भागीदारी थी. 2017 में केरलापाल और दरभा डिविजन में संचालित टीसीओसी में वह शामिल हुए थे. 2017 में उनका तबादला उत्तर सब जोन में हुआ था. नेतृत्वकारी कामरेड की गार्ड जिम्मेदारी निभाते हुए जनवरी, 2018 में किए गए इरपानार हमले में वह शामिल हुए. उत्तर बस्तर डिविजन के प्रतापुर एरिया में बीएसएफ पर किए गए हमले में और महला एंबुश में वह शामिल हुए.

इस तरह सैनिक क्षेत्र में अपना योगदान देते हुए आगे बढ़ने वाले 22 वर्षीय कामरेड भीमा ने जनता के लिए अपनी जान की कुरबानी दी.

कामरेड भीमा अमर रहें!

कामरेड बोडंगा गोटा

कामरेड बोडंगा गोटा माड डिविजन के इंद्रावती क्षेत्र के ताडोपारा गांव वासी थे. बचपन में ही उन्होंने अपने पिता को खोया. अकेली मां ने दो बच्चों – बोडंगा और उनकी बड़ी बहन – का पालन–पोषण किया. संघर्षरत इलाके में पलने–बढ़ने की वजह से कामरेड बोडंगा बचपन में ही क्रांति के प्रति आकर्षित हो गए. बाल संगठन में भर्ती होकर वह क्रांतिकारी आंदोलन का हिस्सा बन गए. बचपन को पार करते ही मिलिशिया में भर्ती होकर जनयुद्ध में शामिल हो गए. अपने एरिया में तबाही मचाने वाले पुलिस बलों को धक्का देने के दृढ़संकल्प के साथ पीएलजीए के मेन फोर्स के साथ गए कामरेड बोडंगा ने जनता के लिए अपनी अनमोल जान न्योछावर की.

कामरेड बोडंगा अमर रहें!

कामरेड संतु गोटा (मोल्लू)

कामरेड संतु गोटा का जन्म माड डिविजन के ओरछामेट्टा जनताना सरकार के सालचेर गांव में हुआ था. वह मां सोमडी व पिता सोमा गोटा के लाड़ले बेटे थे. कामरेड संतु ने पहले बाल संगठन में काम किया था. जब

ओरछामेट्टा में जनताना सरकार का गठन हुआ, तब मिलिशिया पलटन का गठन हुआ था. उस पलटन के एक सेक्शन के कमांडर की जिम्मेदरी कामरेड संतु ने संभाली. जनताना सरकार को बचाने के लिए पलटन द्वारा की गई हर सैनिक कारवाइ में उनका योगदान रहा. भू समतलीकरण अभियान में वह बढ़–चढ़ कर शामिल होते थे. पुलिस बलों के जंगल में घुसने की सूचना पाते ही वह जनता को अलर्ट किया करते थे. और पुलिस बलों का पीछा करते हुए उन्हें हैरान–परेशान करते थे. रातों में घूमने वाले पुलिस मुखबिरों को पकड़ने के लिए रातों में एंबुश बैठते थे. पीएलजीए के प्रथम व द्वितीय बलों के साथ मिल कर रेक्की करते थे और एंबुश में शामिल होते थे. इसी तरह पीएलजीए बलों के साथ मिल कर प्रतिरोध के लिए वह जा रहे थे, तभी पुलिस बलों द्वारा दागी गई गोली उन्हें लगी थी. इसके बावजूद किसी तरह वह किलिंग जोन से बाहर निकल गए. गंभीर रूप से घायल होने की वजह से 16 सितंबर को उनकी मौत हुई.

कामरेड संतु अमर रहें!

कामरेड गागरू सलाम

हृदयाघात के चलते 16 दिसंबर, 2018 की शाम 7.30 बजे को कामरेड गागरु सलाम(55) का निधन हुआ था. शहादत के वक्त वे पूर्व बस्तर डिविजन के आमदायी एरिया में एरिया कमेटी सदस्य की हैसियत से कार्यरत थे.

पूर्व बस्तर डिविजन, नारायणपुर जिला, दौड़ाई क्षेत्र, मर्सुकोल गांव के गरीब आदिवासी किसान परिवार में कामरेड गागरू का जन्म हुआ था. कानी एवं कांडे सलाम की पांच संतानों में से वे चौथे थे. पर्याप्त जमीन न होने की वजह से उनका परिवार तिरका गांव से मर्सुकोल गांव में जा बसा था. कामरेड गागरू शादी–शुदा थे. 1997 में उनकी शादी हुई थी. दो बेटियों और एक बेटे को कामरेड गागरू के हाथ में रख कर बीमारी के कारण 2001 में उनकी पत्नी चल बसी.

कामरेड गागरू ने 1998 में क्रांतिकारी राजनीति में कदम रखा था. उस समय उनके गांव और आसपास के गांवों पर मुखिया लोगों का उत्पीड़न जारी था. छुआछूत एवं कई तरह के नियमों के नाम से वे गरीब जनता पर बेवजह आर्थिक दंड लगाते थे. कामरेड गागरू डीएकेएमएस में शामिल होकर मुखियाओं के उत्पीड़न के खिलाफ अवाज उठाते थे. संगठन में उनकी सक्रियता की वजह से 2001 में वे गांव स्तर के संगठन का अध्यक्ष चुने गए. उसी साल अपनी पत्नी की मृत्यु हो गई, तो अपनी छोटी बच्ची को गोद में लेकर वह संगठन की बैठकों का संचालन किया करते थे. क्रांतिकारी राजनीति से जनता को लैस किया करते थे. गांव की एकता तोड़ने वाले मुखियाओं के खिलाफ संघर्ष करते हुए संगठन को मजबूत करने में उन्होंने अहम भूमिका निभाई. 2002 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई. बाद में डीएकेएमएस रेंज कमेटी का सदस्य बन कर उन्होंने डोंगर–डौला–वयानार–मर्दापाल के बीच के इलाके का नेतृत्व संभाला. पार्टी के आह्वान के मुताबिक बिना कोई हिचकिचाहट घर–बार और छोटेबच्चों को छोड़ कर जून, 2003 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गए.

उस समय तिरका एवं सुलेंगा के कुछ मुखिया लोग अंधविश्वासों की आड़ में जनता को परेशान करते थे, मार देते थे. कामरेड गागरु ने अंधविश्वासों से जनता को बाहर निकालने की कोशिश की. मिलिशिया एवं क्रांतिकारी जनता को एकजुट करके हिम्मत देते हुए कामरेड गागरु ने जनविरोधी मुखियाओं के खिलाफ संघर्ष छेड़ा था. उनके नेतृत्व में कई मुखियाओं को सजा दी गई.

लोहार, यादव, पनार, गांडो, हल्बा, ओझा, दास जैसे गैर आदिवासी लोग एवं बाबा बिहारी के हिन्दू धर्म को माननेवाले कुछ लोग उस इलाके में रहते थे. आदिवासियों से रोटी–बेटी का रिश्ता न रखने पारंपरिक सियानों का दबाव रहता था. यह कहते हुए कि आदिवासियों का खाना खाना पड़ता है, गैर आदिवासी नवजवानों को वे मिलिशिया में भर्ती होने नहीं देते थे. इस तरह की छुआछूत के खिलाफ जनता में चेतना बढ़ाने की उन्होंने कोशिश की, जिसके फलस्वरूप गैर आदिवासी नवजवान

भी मिलिशिया में भर्ती होने लगे थे. उनकी मदद से आदिवासी व गैर आदिवासी युवती–युवकों के बीच में कई प्रेम विवाह हुए.

मर्सुकोल, सुलेंगा, जत्तापारा गांव के बीच में सीमा झगड़ा रहता था. जनता में समझदारी बढ़ाते हुए कामरेड गागरू ने उस झगड़ा को सुलझाया. जंगल विभाग के खिलाफ भी उन्होंने जन आंदोलन का नेतृत्व किया. जंगल विभाग ने जनता की उपजाऊ जमीन पर जबरन पौधे लगा कर नर्सरी बनाया था. कामरेड गागरू के नेतृत्व में उस क्षेत्र की जनता को संगठित करके नर्सरियों में लगाए गए पौधों को उखाड़ फेंक कर किसानों को अपनी जमीन बांटी गयी. उतना ही नहीं, उस क्षेत्र की तमाम सरकारी जमीन में लगाए गए पौधों को भी उखाड़ कर उस जमीन को गरीब किसान एवं विधवाओं के बीच बांटा गया. इस तरह सैकड़ों एकड़ की जमीन पर जनता को अपना हक मिला, जिससे प्रेरित होकर कई गांवों के सैकड़ों लोग क्रांतिकारी आंदोलन में संगठित हो गए. वनोपजों के भाव बढ़ाने, तेंदुपत्ता एवं बांस कटाई की मजदूरी दर बढ़ाने के लिए हुए कई आंदोलनों का उन्होंने नेतृत्व किया. दल्ली–जगदलपुर रेल लाईन एवं बोधघाट बांध के विरोध में संचालित जनांदोलन में कामरेड गागरू की भूमिका रही.

रेंज कमेटी में रहते हुए मर्सुकोल, सुलेंगा, तिरका, बोथा गांवों के जनता को संगठित करके मिलिशिया को मजबूत करने में, 2004 में क्रांतिकारी जनताना सरकार का निर्माण करने में कामरेड गागरू का महत्वपूर्ण योगदान रहा.

पार्टी के आह्वान पर कामरेड गागरू 2004 आखिरी में डौला दस्ते में शामिल हुए. 2006 की शुरुआत में उन्हें एरिया कमेटी की पदोन्नति देकर मर्दापाल इलाके के कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई. कोसा दादा के नाम से वे उस इलाके में लोकप्रिय हो गए. 2008 में डौला, मर्दापाल, वयानार और बेनूर इलाके को मिला कर वयानार दस्ते का गठन किया गया. कामरेड कोसा ने अक्टोबर, 2014 तक वयानार दस्ते की कमांडर जिम्मेदारी संभाली. उनके नेतृत्व में जन संगठनों की सदस्यता सैकड़ों की संख्या में बढ़ गई. दसियों की तादाद में पार्टी इकाइयों का निर्माण किया गया. पार्टी निर्माणों पर उनकी अच्छी पकड़ रहती थी. हर गांव में मिलिशिया मजबूत होने की वजह से 2008 तक पंचायत स्तर की क्रांतिकारी जनताना सरकारों का निर्माण संपन्न होकर वयानार एरिया क्रांतिकारी जनताना सरकार का गठन हुआ था. एरिया कमेटी के सचिवालय सदस्य की हैसियत से साथी कमेटी कामरेडों की मदद करते थे.

2007 से वयानार एरिया में दमन बढ़ गया. आंदोलन को कई नुकसान उठाना पड़ा. इसके बावजूद नवजवान युवती–युवकों को समझाते हुए, उन्हें प्रेरित करते हुए, कामरेड कोसा ने दसियों कामरेडों की जन मुक्ति छापामार सेना में भर्ती की. वयानार एरिया में मिलिशिया कंपनी का निर्माण करने में उनका बड़ा योगदान रहा. शारीरिक रूप से मजबूत एवं मेहनती कामरेड कोसा ने संघर्ष की जरूरतों के मुताबिक सांगठनिक एवं सैनिक क्षेत्रों में अपनी क्षमता को विकसित करने की कोशिश की. तुमिडिवाल, तोयनार, कुदुर, कोंगेरा, झारा, एहकेली, आमदाई घाटी, मुसनार एवं रेखा आदि कई मुठभेड़ों, हमलों एवं एंबुशों में उन्होंने अपने साहस का परिचय दिया. इन सभी घटनाओं में पुलिस बलों को खत्म करके, घायल करके हथियार जब्त किए गए. उन्होंने कुछ वक्त कुवानार एरिया कमेटी के सचिवालय में सदस्य रह कर आमदाई इलाके के संघर्ष में भी अपना योगदान दिया.

डिविजन संघर्ष की जरूरत के अनुसार अक्टूबर, 2014 में कामरेड कोसा को बारसुर इलाके में स्थानांतरित किया गया, जहां उनका परिचय हिडमा नाम से हुआ. 2015 में उन्होंने उस एरिया कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी उठा ली. कम समय में ही उन्होंने जनता एवं एरिया पर पकड़ हासिल करने की कोशिश की. सितंबर, 2017 में कामरेड हिडमा को पूर्व बस्तर डिविजनल कमेटी में लिया गया. डिविजनल कमेटी सदस्य की हैसियत से उन्होंने बारसुर एरिया की जिम्मेदारी संभाली.

एक गलत रुझान में फंसने की वजह से नवबंर, 2018 में कामरेड हिडमा को डीवीसी से डिमोट करके आमदाई एसी में भेजा गया. एक महीने के अंदर ही उनकी दुखद मौत हुई.

कामरेड कोसा पर मनोवैज्ञानिक रूप में दबाव डालने के लिए पुलिस ने उनके जवान बेटे को 2013 से लेकर तीन बार गिरफ्तार करके जेल भेज दिया. कामरेड कोसा की शहादत के वक्त भी उनका बेटा जेल में ही था.

कामरेड गागरु एक निडर व्यक्तित्व के थे. संघर्ष की जरूरतों के मुताबिक हर विषय को सीखने में वे तत्पर रहते थे. सांगठनिक कामों में व्यस्त रहने के बावजूद पढ़ाई पर ध्यान देते थे. अपने 20 साल की क्रांतिकारी जिंदगी में पूर्व बस्तर डिविजन आंदोलन में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया. उनकी शहादत से पूर्व बस्तर डिविजन आंदोलन को बड़ा ही नुकसान हुआ.

कामरेड गागरू अमर रहें!

दंडकारण्य के उन वीर योद्धाओं जिन्होंने भारत की क्रांति के लिए अन्य क्षेत्रों में अपना लहू बहाया, को लाल–लाल सलाम!

दंडकारण्य–एओबी के शहीद

डोकिरीघाटी वीरांगनाओं को लाल सलाम!

एओबी जोन, श्रीकाकुलम–कोरापुट डिविजन, नारायणपट्ना ब्लॉक के डोकिरीघाटी गांव के पास ठहरे गुरिल्ला कामरेडों का घेराव करके 25 मार्च, 2018 की रात 9 बजे को दुश्मन द्वारा एक बड़ा हमला किया गया. इस हमले का सामना करते हुए चार महिला कामरेडों ने शहादत को पाया. शहीदों में सीआरसी की तीसरी कंपनी की पीपीसी सदस्याएं कामरेड्स मुसाकी उंगी(आरती), पोट्टाम कोसी (कुमारी) और पाइके (रणिता) एवं पीएलजीए सदस्या कामरेड लक्के शहीद हुईं. दंडकारण्य की माटी में पैदा होकर अंतर्राष्ट्रीयता की उच्च भावना को ऊंचा उठाते हुए एओबी में जनयुद्ध–जन आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए अपने गरम लहू को बहाने वाली दंडकारण्य की इन पुत्रिकाओं को शत्–शत् नमन अर्पित करें!

कामरेड मुसाकि उंगी (आरती)

मुसाकि उंगी (28) दक्षिण बस्तर डिविजन, कोंटा एरिया, रेगडागट्टा में मां–बाप की तीसरी संतान के रूप में पैदा हुई थीं. बाल संगठन में अपना योगदान देने के बाद 2007 में वह मिलिशिया में भर्ती हुई थीं. 2008 में उन्होंने पेशेवर क्रांतिकारी बन कर स्थानीय दस्ते में लगभग छह महीने काम किया. उसके बाद उनकी नियुक्ति चौथी पलटन में हुई थी. 2009 में उनका तबादला एओबी में हुआ था. 2010 तक उन्होंने प्रोटेक्शन दस्ते में अपना योगदान दिया. बाद में उन्हें सीआरसी की तीसरी कंपनी में स्थानांतरित किया गया, जहां शहादत तक वह कार्यरत थीं. कंपनी द्वारा संचालित कई सैनिक गतिविधियों में कामरेड आरती ने भाग लिया. उनकी राजनीतिक चेतना व सैनिक क्षमता को देख कर जून, 2017 में उन्हें पीपीसी में लिया गया.

जब वह प्रोटेक्शन दस्ते में कार्यरत थीं, उनके साथ काम करने वाले सोनू के साथ उनकी शादी हुई थी. लेकिन उनकी वैवाहिक जिंदगी आगे नहीं बढ़ी. दूसरी लड़की के साथ सोनू आंदोलन को छोड़ भाग गया. उस घटना का कामरेड आरती ने राजनीतिक चेतना व हिम्मत के साथ सामना किया.

उस पीड़ा से उबर कर वह आगे बढ़ रही थीं, इतने में उन्होंने शहादत को पाया.

कामरेड उंगी अमर रहें!

कामरेड पोट्टाम कोसी

पश्चिम बस्तर डिविजन, गंगालूर एरिया के पुंबाड गांव में कामरेड कोसी (कुमारी) की पैदाइश हुई थी. बाल संगठन में अपने योगदान देने के बाद 16 वर्ष की उम्र में वह सीएनएम में भर्ती हुई थीं. 2009 में पेशेवर क्रांतिकारी बन कर उन्होंने स्थानीय दस्ते में काम किया. 2010 में सीआरसी की तीसरी कंपनी में उनकी नियुक्ति हुई, जहां उन्होंने डॉक्टर की जिम्मेदारी संभाली. 2013 में उन्हें डिप्यूटेशन पर नारायणपट्ना में सांगठनिक काम करने के लिए भेजा गया था. एसी सदस्या की हैसियत से उन्होंने जनता को एकजुट करने की कोशिश की. सक्रिय रूप से काम करते हुए डिविजन आंदोलन में वह एक महत्वपूर्ण कामरेड के रूप में विकसित हुईं.

2012 में उनकी शादी हुई. हालांकि 2016 में उनके जीवन साथी कामरेड जयराम दुर्घटनावश माइन विस्फोट होकर शहीद हुए थे. उस दर्द का कामरेड कुमारी ने राजनीतिक चेतना के साथ सामना किया.

न सिर्फ उनके जीवन साथी बल्कि हजारों शहीदों की प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने के क्रम में शहीद होकर वह खुद एक प्रेरणा स्रोत बन गईं.

कामरेड कोसी अमर रहें!

कामरेड पाइके (रणिता)

पश्चिम बस्तर डिविजन, भैरमगढ़ एरिया के कमका गांव में 25 वर्ष पहले कामरेड पाइके मां–बाप की दूसरी संतान के रूप में पैदा हुई थीं. बचपन में ही उन्होंने मां–बाप को खोया. दादी–दादा ने उनका पालन–पोषण किया. ऐसे में बचपन में ही जबरन उनकी शादी की गई. लेकिन तीन वर्षों के बाद उन्होंने उस शादी के बंधन को तोड़ दिया. उनके भाई पीएलजीए में कार्यरत थे. तोमगुडा के सलवा जुडुम कैंप पर पीएलजीए द्वारा किए गए हमले में उनकी शहादत हुई. कामरेड पाइके ने भी अपनी भाई की तरह कुरबानी की राह पर चलने का फैसला किया. 2009 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने पीएलजीए में कदम रखा था. कुछ वक्त गंगालूर एलओएस में काम करने के बाद दिसंबर, 2010 में उनका तबादला एओबी में हुआ था, जहां उनकी नियुक्ति सीआरसी की तीसरी कंपनी में हुई. उस कंपनी द्वारा की गई अधिकतर सैनिक कार्रवाइयों में उन्होंने भाग लिया. राजनीतिक व सैनिक रूप में विकसित होने के क्रम में उन्होंने पीपीसीएम की पदोन्नति हासिल की.

ऊपरी कमेटी द्वारा सौंपी गई एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाने के तहत साथी कामरेडों के साथ कामरेड रणिता भी डोकिरिघाटी में ठहर गई. उस समय पुलिस द्वारा अचानक की गई गोलीबारी से कामरेड रणिता न सिर्फ सुरक्षित बाहर निकली बल्कि अपनी एक घायल साथी को भी साथ में ले गईं. जब घायल साथी के इस आग्रह कि वह नहीं चल सकेंगी और उनकी बंदूक ले जाया जाए, पर कामरेड रणिता उनकी बंदूक लेकर आगे बढ़ी थीं. लेकिन घात लगाकर बैठे पुलिस बलों द्वारा फिर से किए गए हमले में कामरेड रणिता ने वीरगति को प्राप्त किया.

कामरेड रणिता अमर रहें!

कामरेड मुचाकी लक्के

सुकमा जिला, कोंटा तहसील, मडपि दूलोड गांव में कामरेड लक्के का जन्म हुआ. बचपन में ही मां–बाप को खोने वाली कामरेड लक्के का पालन–पोषण कांकेरलंका में निवासरत उनके मामा–मामी के घर में हुआ था. मामा संगठन में काम करते थे. गांव व घर के क्रांतिकारी माहौल में कामरेड लक्के भी बचपन में ही क्रांतिकारी बन गई. बाल संगठन में उनका योगदान था. 16 वर्ष की उम्र में उनकी नियुक्ति सीएनएम में हुई थी. दिसंबर, 2016 में पेशेवर बन कर उन्होंने पीएलजीए में कदम रखा था. कुछ वक्त स्थानीय इलाके में काम करने के बाद पार्टी के फैसले के अनुसार वह एओबी में काम करने गईं. वहां उनकी नियुक्ति एसजेडसीएम की सुरक्षा गार्ड के तौर पर हुई थी. उस जिम्मेदारी को निभाते समय ही उनकी शहादत हुई.

कामरेड लक्के अमर रहें!

कामरेड पीसाल (संदीप)

17 मई, 2018 को एओबी के मलकनगिरी जिले के पानीपोदर के आस–पास के गांवों में पुलिस बलों द्वारा एक बड़ा अभियान संचालित किया गया. उस क्षेत्र में उच्च स्तर के नेतृत्वकारी कामरेडों के होने की सूचना प्राप्त कर इस अभियान को पुलिस ने संचालित किया. इस दौरान घात लगा कर बैठे पुलिस बलों द्वारा की गई फाइरिंग में कामरेड संदीप की शहादत हुई. शहादत के वक्त कामरेड संदीप गार्ड जिम्मेदारी निभा रहे थे.

सुकमा जिला, मुंडुम गांव में कामरेड संदीप का जन्म हुआ. बचपन में ही उनके सिर से मां का साया उठ गया,

तो पिता व भाइयों के हाथों में उनकी परवरिश हुई. कामरेड संदीप ने पहले बाल संगठन में काम किया. 16 वर्ष की उम्र में मिलिशिया में भर्ती होकर उन्होंने सक्रिय रूप से काम किया. 2017 की शुरुआती में वे पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. छह महीने तक स्थानीय दस्ते में उन्होंने अपना योगदान दिया. सितंबर, 2017 में उनकी नियुक्ति एओबी में कार्यरत एक नेतृत्वकारी कामरेड के सुरक्षा गार्ड के रूप में हुई थी. उन्होंने अपने कमांडर की आंख की पुतली के समान रक्षा करते हुए अपने–आपको एक आदर्श गार्ड के रूप में ढाल दिया.

दुश्मन द्वारा रामगुडा में हुए भीषण हमले में से अपने कमांडर को बचाने के लिए न सिर्फ उन्होंने डट कर प्रतिरोध ा किया, बल्कि दुश्मन द्वारा बरसाई गई गोलियों से अपने कमांडर को बचाने के लिए अन्य गार्ड कामरेडों के साथ मिल कर उन्होंने उच्च स्तरीय आत्मबलिदान की भावना के साथ अपने शरीर को साक्षात् कवच बना लिया. टिक्रापाडु में दुश्मन द्वारा किए गए और एक बड़े हमले के दौरान भी अपने कमांडर को बचाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

नेतृत्वकारी कामरेडों की सुरक्षा को सर्वप्रथम महत्व देने वाले एक आदर्श युवा योद्धा को पीएलजीए ने खो दिया.

कामरेड संदीप अमर रहें!

दंडकारण्य–ओडिशा के शहीद

कामरेड सुकमन कोर्राम

गोबरा दस्ते के कमांडर कामरेड सुकमन (सेवक) 11 मई, 2018 को जब कुछ काम पर चंदन बहार गांव (धमतरी जिला) जा रहे थे, बीच रास्ते में ही पुलिस ने उन्हें ध ार–दबोचा. बाद में बेरहमी से यातनाएं देकर उनकी हत्या करके मुठभेड़ की कहानी सुनाई गई.

ओडिशा के ध ामतरी में अपना खून बहाने वाले कामरेड सेवक ने दंडकारण्य में जन्म लिया था. पूर्व बस्तर डिविजन, वयानार क्षेत्र, कोंगेरा गांव के मध्यम वर्गीय परिवार में मां–बाप की प्रथम संतान के रूप में वह पैदा हुए थे. उनकी दो बहनें और एक भाई हैं. 1990 में उनका परिवार क्रांति से जुड़ गया, जिसके प्रभाव से कामरेड सेवक भी क्रांतिकारी बन गए. गांव में रहते समय वह मिलिशिया में काम करते थे. 2006 में वे पेशेवर बन कर, घर–बार छोड़ कर गुरिल्ला दस्ते में शामिल हुए थे. पूर्व बस्तर डिविजन में एक वर्ष काम करने के बाद 2007 में पार्टी ने उन्हें मैनपूर डिविजन में भेज दिया. उसी वक्त वे पार्टी सदस्य बन गए. वहां उन्होंने एक डीवीसीएम की गार्ड जिम्मेदारी निभाई. 2010 में उन्हें एरिया कमेटी सदस्य की पदोन्नति दी गई. साथ ही सीतानदी दस्ते के उप कमांडर की जिम्मेदारी भी उन्हें सौंपी गई. 2011 में वे रावास दस्ते के कमांडर बन गए. 2012 में डिविजन के एलजीएस में उनका तबादला किया गया, जहां उन्होंने ढाई वर्ष तक अपना योगदान दिया. सितंबर, 2015 में उन्हें गोबरा एरिया कमांडर का दायित्व दिया गया. जनवरी, 2018 में वह एसी सचिव बन गए. नए इलाके में जाने के बाद कामरेड सेवक ने वहां की भाषा सीख कर, मूलभूत समस्याओं के हल के लिए जनता को संगठित करने का प्रयास किया.

कई सैनिक कार्यवाहियों में भी उन्होंने अपना साहस का परिचय दिया. 2008 में मांदगिरी एंबुश में वह शामिल हुए थे. 2013 में खल्लरी गांव में जब डेरा पर फाइरिंग हुई थी, संतरी पर तैनात कामरेड सेवक ने हिम्मत के साथ मुकाबला करते हुए सीआरपीएफ की कंपनी के एक डिप्युटी कमांडेंट को मार गिराया और एक को गंभीर रूप से घायल कर दिया.

13 सितंबर, 2017 की रात 7 बजे को फरशिया गांव में गद्दरी के कारण हुई एक फाइरिंग में कामरेड सेवक गंभीर रूप से घायल हुए थे. उसके बावजूद रातों–रात वे डेरे में पहुंचे थे. पार्टी और जनता ने इलाज करके उन्हें बचा लिया. कुछ ही महीनों के बाद झूठी मुठभेड़ में उन्होंने शहादत को पाया.

कामरेड सेवक अमर रहें!

डुडुकामाल अमर शहीदों को लाल सलाम!

बलंगीर जिला, बेलपाडा ब्लॉक, डुडुकामाल गांव में 12 मई, 2018 की रात को जब गुरिल्ला बल जनता से बात कर रहे थे, इसकी सूचना प्राप्त कर पुलिस बलों ने घेराव करके अंधाधुंध गोलियां बरसाईं. इस गोलीबारी में बलंगीर डिविजनल कमेटी सदस्य कामरेड संजीव और बलंगीर स्थानीय गुरिल्ला दस्ते के डिप्युटी कमांडर कामरेड राकेश की शहादत हुई.

कामरेड संजीव

कामरेड संजीव का जन्म दंडकारण्य के बीजापुर जिले के चीपुरबट्टि गांव में हुआ था. मासे और वेको बंडी दंपति की पांच संतानों में कामरेड संजीव तीसरे थे. गरीबी के कारण कामरेड संजीव को पढ़ाई नसीब नहीं हुई थी. बचपन से वह खेती काम में मां–बाप का हाथ बंटाते थे. जमीन की कमी के कारण वह मजदूरी भी किया करते थे. कुछ वर्ष दूसरों के पास नौकर भी रहे थे. अपनी मुश्किल भरी जिंदगी के अनुभव से उन्होंने क्रांति की जरूरत को अच्छी तरह समझ लिया. जवानी में कदम रखते ही मिलिशिया में भर्ती हो गए. दो वर्ष तक मिलिशिया में काम करने के बाद दिसंबर, 2005 को पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में वे पीएलजीए में भर्ती हो गए. भर्ती होने के बाद उनका पहला योगदान दक्षिण बस्तर डीवीसी दस्ते में था. वहां उन्होंने पांच वर्ष काम किया. उनकी राजनीतिक व सांगठनिक क्षमता देख कर डीवीसी ने उन्हें एरिया कमेटी सदस्य की पदोन्नति दी और दस्ते के डिप्युटी कमांडर की जिम्मेदारी भी सौंपी थी. 2010 में उन्हें पार्टी के विस्तार के उद्देश्य से ओडिशा भेजा गया. वहां मार्च, 2012 तक उन्होंने बरगढ़ पलटन के डिप्युटी कमांडर की जिम्मेदारी निभायी. उसके बाद बलंगीर पलटन में उनका तबादला हुआ. 2014 में पलटन कमांडर और एरिया कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी उन्होंने उठायी. उनका कामकाज और क्षमता को देख कर अक्टूबर, 2015 में उन्हें बलंगीर डिविजनल कमेटी में लिया गया. शहादत तक वह उस जिम्मेदारी को निभाते रहे.

कामरेड संजीव ने कई सैनिक कार्यवाहियों में अपना योगदान दिया. मिलिशिया में काम करते समय बासागुडा रोड पर बम विस्फोट करके एक थानेदार को घायल करने में उनकी भूमिका रही थी. डीवीसी दस्ते में काम करते समय तीन एंबुशों में शामिल हुए थे, जिनमें ऐतिहासिक मुकरम एंबुश भी शामिल था. ओडिशा में जाने के बाद न सिर्फ एक–दो एंबुशों बल्कि 8 मुठभेड़ों में वह शामिल हुए थे.

ओडिशा जाने के बाद कामरेड संजीव ने वहां की भाषा सीख ली. वहां की जनता के साथ वह घुलमिल गए थे. उसके सुख–दुख में शामिल हुए. उन्होंने जनता को क्रांतिकारी राजनीति से लैस करते हुए, उसे संगठित करने का प्रयास किया. उसी क्रम में उन्होंने अपनी अनमोल जान को कुरबान किया.

कामरेड संजीव अमर रहें!

कामरेड दूदी बुदरा (राकेश)

दक्षिण बस्तर डिविजन, किष्टारम एरिया, वीरापुरम गांव के आदिवासी गरीब किसान परिवार में कामरेड राकेश का जन्म हुआ. मूडे और दूदी उंगाल दंपति की छह संतानों में कामरेड राकेश तीसरे थे. बुधवार के दिन जन्म लेने के कारण मां–बाप उन्हें प्यार से बुदरा नाम दिया. गरीबी के चलते उन्हें पढ़ाई नसीब नहीं हुई. वह बचपन से ही खेती काम में मां–बाप का हाथ बंटाते थे. जब उन्होंने किशोर अवस्था में कदम रखा था, चेतना नाट्य मंच में भर्ती हो गए. क्रांतिकारी दिवसों के मौकों पर कामरेड राकेश क्रांतिकारी नाच–गाना के जरिए जनता को प्रेरित किया करते थे. 2007 में कामरेड राकेश पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में भर्ती होकर किष्टारम एरिया में कार्यरत 8वीं पलटन का हिस्सा बन गए. 2010 में उन्हें ओडिशा भेजा गया. वहां पहले उन्होंने बलंगीर पलटन में काम किया. 2013 में बलंगीर एरिया कमेटी सदस्य बन गए. दिसंबर, 2017 में उन्होंने बलंगीर स्थानीय गुरिल्ला दस्ते के डिप्युटी कमांडर की जिम्मेदारी उठायी.

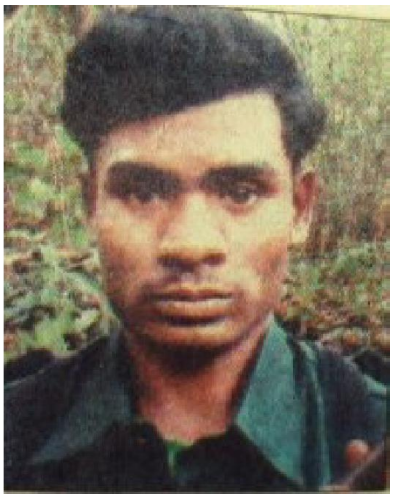

दुबला पतला बदन, सांवले रंग वाले कामरेड राकेश सरल स्वभाव के थे. वहां की भाषा सीख कर, वहां की रीति–रिवाजों को समझ कर जनता के साथ वे घुलमिल जाते थे. उन्होंने लोगों की मुश्किलों को समझ कर उन्हें क्रांति का रास्ता दिखाया. दंडकारण्य और ओडिशा में हुई कई मुठभेड़ों और एंबुशों में कामरेड राकेश ने भाग लिया. नयागढ़ रेड में जब्त किए गए हथियारों को दंडकारण्य तक पहुंचाने में कामरेड राकेश का योगदान रहा.

कामरेड राकेश की शहादत से ओडिशा आंदोलन ने एक अनमोल युवा गुरिल्ला योद्धा को खो दिया.

कामरेड राकेश अमर रहें!

गाडंगी वीर शहीदों को लाल सलाम!

13 मई, 2018 को कंदमाल जिला, कोजरीपाडा ब्लॉक, सुड्रुकुंबा–गाडंगी गांव के पास जंगल में पीएलजीए के डेरे का घेराव कर दुश्मन द्वारा किए गए हमले का बहादुरी के साथ लड़ते हुए केकेबीएन डिविजनल कमेटी के दो सदस्य कामरेड मदन और कामरेड विनय के अलावा पीपीसी सदस्य कामरेड भीमा, कामरेड शीला और कामरेड राधा शहीद हुए थे.

कामरेड चमरू कोर्राम (मदन)

कामरेड मदन नारायणपुर जिला, मातला पंचायत, पानी गांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में जन्मे थे. फगनी और गंदरू कोर्राम की चार संतान में वे तीसरे थे. बचपन में ही उनके पिता की मौत हुई थी. गरीबी और पिता के निधन की वजह से कामरेड मदन को प्राथमिक शिक्षा छोड़ कर खेती काम करना पड़ा. संघर्षशील इलाका होने के नाते बचपन में ही क्रांति से उनका रिश्ता बन गया. बाल संगठन में कुछ वक्त उन्होंने काम किया. 2004 में पेशेवर क्रांतिकारी बन कर वे पीएलजीए में भर्ती हो गए.

आरंभ में छह महीने तक उन्होंने डौला एलओएस में अपना योगदान दिया. बाद में उनका तबादला कुतुल इलाके में कार्यरत पीएल–1 में हुआ. राजनीतिक व सैनिक रूप से विकसित होने के क्रम में वह उस पीएल की पार्टी कमेटी में शामिल हुए. बाद में उन्होंने सेक्शन कमांडर की जिम्मेदारी भी संभाली. पीएल में काम करते समय उन्होंने माड डिविजन में संचालित कई सैनिक कार्यवाहियों में भाग लिया. आकाबेडा मुठभेड़, कुर्सनार पुलिस कैंप पर किए गए हमले, बेरावेडा एंबुश, बासिंग नाईट एंबुश में वे शामिल हुए थे.

पार्टी के विस्तार के लिए 2010 में दंडकारण्य से ओडिशा में जब एक कंपनी की तादाद में बलों को भेजा गया था, उनमें कामरेड मदन भी शामिल थे. सैकड़ों किलोमीटर चल कर ओडिशा के बलंगीर–बरगढ़–महासमुंद तक पार्टी व क्रांतिकारी राजनीति को फैलाने में उन्होंने अपना योगदान दिया. पडकीपाली, गुमराडा, सपमुडि, कोदराभाटा, सतराबेरा, मोहनपल्लि, टीबूपल्लि, मेशना आदि कई मुठभेड़ों में दुश्मन का हिम्मत के साथ सामना करते हुए वे विस्तार इलाके में डटे रहे. सपमुडि ऑपर्चुनिटी एंबुश में भी उन्होंने भाग लिया.

2010 में कामरेड मदन पलटन के डिप्युटी कमांडर की जिम्मेदारी उठाई. नवंबर, 2014 में कामरेड मदन को डीवीसी में को–आप्ट किया गया. 2015 में आयोजित बीबीएम डिविजन के अधिवेशन में वे डीवीसी में चुने गए. को–ऑप्शन से लेकर फरवरी, 2018 तक महासमुंद के एरिया कमेटी सचिव और बीबीएम डिविजनल कमेटी सदस्य के रूप में उन्होंने अपनी जिम्मेदारी निभाई.

फरवरी, 2018 में कामरेड मदन का तबादला केकेबीएन डिविजन में हुआ था. हंसी–खुशी से उस तबादले प्रस्ताव को स्वीकार करके उन्होंने केकेबीएन डिविजन में कदम रखा था. हालांकि कुछ ही दिनों में उनकी शहादत हुई.

कामरेड मदन की शहादत से सैनिक क्षेत्र में उभरते हुए एक युवा नेता को ओडिशा आंदोलन ने खो दिया, जो कि बहुत ही नुकसानदेह है.

कामरेड मदन अमर रहें!

कामरेड कारम लक्की (शीला)

कामरेड शीला तिम्मेनार गांव के एक गरीब परिवार में पैदा हुई थीं. वह मां–बाप की दूसरी संतान थीं. कामरेड शीला ने पहले बाल संगठन में काम किया. बाद में गांव के सीएनएम में एक साल तक उन्होंने अपना योगदान दिया. उनकी प्रतिभा देख कर बाद में उनकी नियुक्ति एरिया सीएनएम में की गई. वह सितंबर, 2011 में पेशेवर क्रांतिकारी बन गईं.

बटालियन के सीएनएम यूनिट में उन्होंने अपना योगदान दिया. चार वर्ष तक गार्ड की जिम्मेदारी भी निभाई.

कामरेड शीला अमर रहें!

कामरेड भीमा

लगभग पच्चीस वर्ष पहले सुकमा जिला, हितान गांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में कामरेड भीमा पैदा हुए थे. गांव में रहते समय स्थानीय सीएनएम कमांडर के रूप में काम करते हुए फासीवादी सलवा जुडुम दमन के खिलाफ जनता को जागरूक किया. सलवा जुडुम के खिलाफ जारी प्रतिरोध में भी उनकी भागीदारी थी. विंजरम में सलवा जुडुम गुंडों को खतम करने में उन्होंने भाग लिया.

2007 में वे पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. सिंगनमडुग में दुश्मन पर किए गए हमले जिसमें दुश्मन के कोबरा बल के छह जवानों को खतम किया गया, में कामरेड भीमा का योगदान रहा. उनकी नियुक्ति एक डीवीसीएम के गार्ड के रूप में हुई थी. तीन साल तक उन्होंने वह जिम्मेदारी निभाई. 2010 में उनका तबादला 8वीं पीएल में हुआ था. पार्टी सदस्य की हैसियत से उन्होंने सेक्शन के उप कमांडर की जिम्मेदारी निभाई. उस वक्त कई प्रतिरोध घटनाओं में उनकी भागीदारी थी. 2013 में किए गए बट्टिगूडेम एंबुश, जिसमें पुलिस के 9 जवान मारे गए और बंदूकें भी जब्त की गई, में कामरेड भीमा शामिल थे. उरपलमेट्टा एंबुश में भी उन्होंने भाग लिया. 2016 में उनका तबादला ओडिशा राज्य में हुआ जहां उनकी नियुक्ति पलटन–28 में हुई थी. सितंबर, 2016 में पीपीसी सदस्य बन कर उन्होंने सेक्शन कमांडर की जिम्मेदारी उठाई. उस वक्त उन्हें कई मुठभेड़ों का सामना करना पड़ा था. नये इलाके, अनजान भाषाएं और तीव्र दमन के बावजूद वे ओडिशा राज्य में डटे रहे थे.

कामरेड भीमा अमर रहें!

कामरेड राधा

कामरेड राधा का जन्म दक्षिण बस्तर, कोंटा एरिया के मोरपल्ली गांव में एक आदिवासी मध्यम किसान परिवार में 20 साल पहले हुआ था. बचपन में ही बाल संगठन के जरिए कामरेड राधा की क्रांतिकारी जिंदगी की शुरूआत हुई थी. बाद में उन्होंने सीएनएम कलाकरणी बन कर गीत–नृत्यों और नाटकों के जरिया जनता में क्रांतिकारी राजनीति के प्रचार–प्रसार में अपना योगदान दिया.

कामरेड राधा ने सलवा जुडुम उत्पात को भी अपनी आंखों से देखा था. जुडुम के गुंडों ने उनके गांव व घर को भी दो बार आग के हवाले कर दिया था. जब कामरेड राधा बाल संगठन में कार्यरत थी उनके बड़े भाई कामरेड रामाल पेशेवर बन कर पीएलजीए में भर्ती हो गए. 2010 में ऐतिहासिक मुकरम हमले में उनकी शहादत हुई. अपने भाई की शहादत के बाद कामरेड राधा ने भी पूर्णकालीन क्रांतिकारी बनने की ठान ली. सितंबर, 2013 में गुरिल्ला बन कर उन्होंने जगरगुंडा एसी के मातहत चार महीने तक काम किया. 2014 में पीएल–28 में उनका तबादला किया गया. पीएल में उन्होंने डॉक्टर की जिम्मेदारी निभाई. साथी कामरेडों और जनता को बड़े ही तत्परता के साथ वह इलाज किया करती थीं. वहां काम करते वक्त उन्हें ओडिशा राज्य में स्थानांतरित किया गया. वह बिना कोई हिचकिचाहट के उस तबादले प्रस्ताव को मान कर ओडिशा चली गईं. ओडिशा में जाने के बाद वहां की भाषा सीख कर वहां की जनता के साथ वह घुल मिलकर रहती थीं.

वह निजी समस्या से कभी नाराज न होती थीं. पार्टी की गुप्तता को बचाती थीं. पार्टी के अनुशासन व कमांडर के आदेशों का कड़ाई से पालन करते हुए पार्टी द्वारा तय जिम्मेदारियों को अलग–अलग डिविजनों में घूमते हुए निभाती रही. उसी वक्त कामरेड राधा की शहादत हुई.

कामरेड राधा अमर रहें!

दंडकारण्य–एमएमसी शहीद

कामरेड मडकम मंगू (सुनील)

31 मई, 2018 को एमएमसी के कबीरदाम डिविजन के तारेगांव थाना अंतर्गत बकरी जंगल में पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में दुश्मन के साथ आमने–सामने लड़ते हुए 18 वर्षीय युवा गुरिल्ला कामरेड मडकम मंगू (सुनील) ने शहादत को पाया. क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार के

मकसद से उच्च चेतना को दिखाते हुए कबीरदाम डिविजन में अपने गरम लहू को बहाने वाले कामरेड मंगु का जन्म दंडकारण्य में हुआ था.

जमीन तलाशते हुए कामरेड मडकम मंगू (सुनील) के मां–हिडमे और बाप–मडकम बंडी दंतेवाड़ा जिला, कुंवाकोंडा ब्लॉक समेली गांव से पलायन करके पश्चिम बस्तर के पिडिया एरिया मदूम गांव में आए थे. उसी गांव में कामरेड मंगू का जन्म हुआ था. क्रांतिकारी नाच–गाना देखते, सुनते कामरेड मंगू का बचपन गुजरा था. उस प्रभाव से वह बाल संगठन का हिस्सा बन गया. कामरेड मंगू की चेतना व क्षमता देख कर स्थानीय पार्टी ने उनकी नियुक्ति सीएनएम में की थी. तीव्र दमन के बीच में उन्होंने सीएनएम में दो साल तक अपना योगदान दिया.

2013 में उनके गांव पर हमला करने वाले पुलिस बल कामरेड मंगू सहित और कुछ लोगों को पकड़ कर गंगालूर थाने में ले गए थे. उस वक्त कामरेड मंगू को पुलिस ने कई यातनाएं दी, जिनका कामरेड मंगू ने हिम्मत के साथ सामना किया. हालांकि गांव की संघर्षरत महिलाओं ने पुलिस के साथ लड–भिड़ कर मंगू सहित सभी लोगों को छुड़ाया था. बाद में कामरेड मंगू ने मिलिशिया में भर्ती होकर छोटी–मोटी प्रतिरोध कार्रवाइयों में भाग लिया.

जुलाई, 2015 में कामरेड मंगू पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. उसके बाद उन्हें एमएमसी में भेजा गया, जहां कामरेड मंगू का परिचय सुनील के नाम पर हुआ था.

वहां की भाषा सीख कर जनता को एकजुट करने में उन्होंने अपना योगदान दिया. वह पीएलजीए अनुशासन का सटीक पालन करते थे. अपनी राजनीतिक चेतना व सैनिक क्षमता बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास करते थे. निरंतर जारी पुलिस बलों के गश्त अभियान व हमलों के बीच में वह उस इलाके में डटे रहे थे.

कामरेड सुनील ने छोटी उम्र में ही पार्टी के आह्वान को ऊंचा उठाते हुए क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार में अपना योगदान देते हुए अपनी जान की कुरबानी दी.

कामरेड मंगू अमर रहें!

(आखिरी पेज से...)

सामने उनकी अस्वस्थता अप्रधान हो गई. जेल से छूटने के कुछ ही दिनों के बाद उन्होंने फिर गुरिल्ला जिंदगी में कदम रखा था. वह उत्तर तेलंगाना के लिए बहुत ही कठिन वक्त था. इसके बावजूद 2008 तक वे केकेडब्ल्यू आंदोलन में अपना योगदान देती रही.

2008 में उनके जीवनसाथी के साथ ही उनका भी एओबी में तबादला हुआ. 2009 की शुरुआत में वह मलकनगिरी डिविजन के पोडिया एरिया कमेटी में शामिल हुई. उसी वर्ष संपन्न डिविजनल प्लीनम में वह डिविजन कमेटी की वैकल्पिक सदस्या के रूप में चुन ली गईं. 2009 से 2015 आखिरी तक पोडिया एरिया कमेटी सचिव व डीवीसी सदस्या के रूप में उन्होंने अपनी जिम्मेदारी निभायी. 2016 में उनका तबादला मलकनगिरी–कोरापुट–विशाखा बॉर्डार (एमकेवीबी) डिविजन में हुआ था. 2017 तक वह पेदाबयलु एरिया में कार्यरत थीं. 2017 में डीवीसी सचिवालय सदस्या की हैसियत से व्यापक जनता में उन्होंने काम किया.

सैनिक क्षेत्र में भी कामरेड मीना का अनमोल योगदान रहा. तेलंगाना में ऐसे हालात भी थे कि एक ही महीने में पांच व छह बार भी मुठभेडों का सामना करना पड़ता था. ऐसे में कई मुठभेड़ों में उन्होंने हिम्मत व साहस से दुश्मन के साथ आमने–सामने लड़ाई लड़ी थी. कई मुठभेड़ों में कमांडर के आदेश के अनुसार अड्वान्स होते हुए घायल साथियों को रिट्रीट कराया. कुछ एंबुश व रेडों में भी उनकी भागीदारी थी. एटूरनागारम में पुलिस जीप पर किए गए एंबुश और एटूरनागारम पुलिस कैंप पर किए गए रेड में उनकी सक्रिय भागीदारी थी.

अपनी 23 वर्ष की लंबी क्रांतिकारी जिंदगी में कामरेड प्रमीला तेलंगाना व एओबी के क्रांतिकारी आंदोलनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया. ऐसे में उन्हें खोना बहुत ही नुकसानदेह है.

कामरेड प्रमीला के दृढ़ संकल्प व प्रतिबद्धता, उनके द्वारा अपनाए गए आदर्श एवं मूल्यों से सीख लें!

कामरेड प्रमीला अमर रहें!

कृपया प्रभात के लिए डिविजनों से सही समय पर अमर शहीदों की जीवनियां भेजे. जीवनियों के साथ तस्वीरें जरूर संलग्न करें

– संपादक मंडल

तेलंगाना की संघर्ष विरासत को ऊंचा उठाते हुए एओबी के जनयुद्ध में अपना लहू बहाने वाली कामरेड प्रमीला को लाल सलाम!

12 अक्टोबर, 2018 को एओबी जोन, मलकनगिरी जिला, कटाफ एरिया में पुलिस बलों ने मलकनगिरी डिविजनल कमेटी की सदस्या कामरेड प्रमीला (शारदा, जिलानी, मीना) की हत्या की.

तेलंगाना राज्य, तत्कालीन वारंगल (अब जनगांव) जिला, बच्चन्नापेटा मंडल, पोचन्नापेटा गांव के निम्न मध्यम वर्गीय परिवार में 41 वर्ष पहले कामरेड प्रमीला पैदा हुई थीं. मां–बाप की पांच संतानों में वह सबसे छोटी थीं. उस इलाके की उत्पीड़ित जनता ने 1946–52 के बीच में जारी तेलंगाना किसान सशस्त्र संघर्ष में बढ़–चढ़ कर भाग लिया. उस विरासत को ऊंचा उठाते हुए जब भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) के नेतृत्व में सशस्त्र संघर्ष की शरुआत हुई, फिर उस इलाके की जनता संघर्षरत हो गयी. कामरेड प्रमीला के परिवार ने भी वर्ग संघर्ष में हिस्सा लिया. गांव व परिवार की क्रांतिकारी पृष्ठभूमि में पलने–बढ़ने वाली कामरेड प्रमीला स्वाभाविक रूप से ही क्रांति के प्रति आकर्षित हो गई. परिवार से भी उन्हें प्रोत्साहन मिला. नतीजतन 1996 की शरुआती में पेशेवर क्रांतिकारी बन कर उन्होंने गुरिल्ला जिंदगी में कदम रखा था.

पहले वह स्थानीय चेर्याल दस्ते का हिस्सा बनीं. शारदा नाम से एक वर्ष तक उन्होंने उसमें काम किया. उसके बाद उनका तबादला नेक्कोंडा दस्ते में हुआ था. 1997 के बीच में ही और एक बार उनका तबादला कंबाट पीएल में हुआ था. उस तबदले फैसले का उन्होंने तहे दिल से स्वीकार किया. वहां एक वर्ष काम करने के बाद अस्वस्थ होने की वजह से इलाज के लिए जब वह बाहरी इलाके में गई थीं, उनकी गिरफ्तारी हुई. उस वक्त पुलिस द्वारा बुरी तरह यातनाएं दी गई. बावजूद इसके उन्होंने पार्टी गुप्तता को बचाये रखा. आठ माह जेल में बिताने के बाद जेल से रिहा होकर फिर उन्होंने आंदोलन में भाग लिया. 1999 में उनकी नियुक्ति एटूर नागारम दस्ते में हुई थी. उस दस्ते में काम करते समय में ही उनके पसंदीदा कामरेड के साथ उनकी शादी हुई.

2000 में वे एरिया कमेटी की सदस्या बनी थीं. 2001 में विशेष महिला दस्ते की कमांडर व ऑर्गनाइजर जिम्मेदारी उन्हें दी गई. महिलाओं की पृथक समस्यओं पर उन्हें एकजुट करके कई आंदोलनों का कामरेड प्रमीला ने नेतृत्व किया. बड़े पैमाने पर महिलाओं को संगठनों, आंदोलनों में शामिल किया. गुरिल्ला दस्तों में भी महिलाओं की भर्ती करके उन्होंने पार्टी के लिए एक अच्छा अनुभव दिया. उस क्रम में वह जिलानी बेगम नाम से जनता में लोकप्रिय हो गईं.

दुश्मन की एलआईसी नीति के तहत 2003 तक उत्तर तेलंगाना में क्रांतिकारी आंदोलन तीव्र दमन का शिकार होकर भाटे की स्थिति में पहुंच गया. उस वक्त सामने आई कई कठिनाइयों का सामना करते हुए अन्य कामरेडों के साथ उन्होंने दृढ़तापूर्वक काम किया. 2003 में वह महदेवपूर एलओएस की कमांडर बनीं. 2004 में आंध्रप्रदेश सरकार के साथ हुई वार्तालाप के वक्त उन्होंने बड़े पैमाने पर जनता को संगठित किया. कई युवती–युवकों को पीएलजीए में भर्ती किया.

2003 में कामरेड जिलानी की बच्चेदानी में कुछ फोड़े पैदा हुए. 2005 में जब इलाज के लिए वह बाहर गई थीं, विजयवाडा में फिर एक बार उनकी गिरफ्तारी हुई. बुरी तरह यातनाएं देकर दसियों मामलें थोप कर उन्हें फिर एक बार वारंगल जेल में डाल दिया गया. जेल में अन्य कामरेडों के साथ मिल कर उन्होंने कई संघर्षों में भाग लिया. चार महीनों के बाद उन्हें जमानत मिली. तब तक उनका स्वास्थ्य और बिगड़ गया. लेकिन उनके दृढ़ संकल्प के

(शेष पेज 23 में...)